श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (रजिस्टर्ड)

कार्यालय : गीता भवन ट्रस्ट बिल्डिंग, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

कुरुक्षेत्र दर्शन

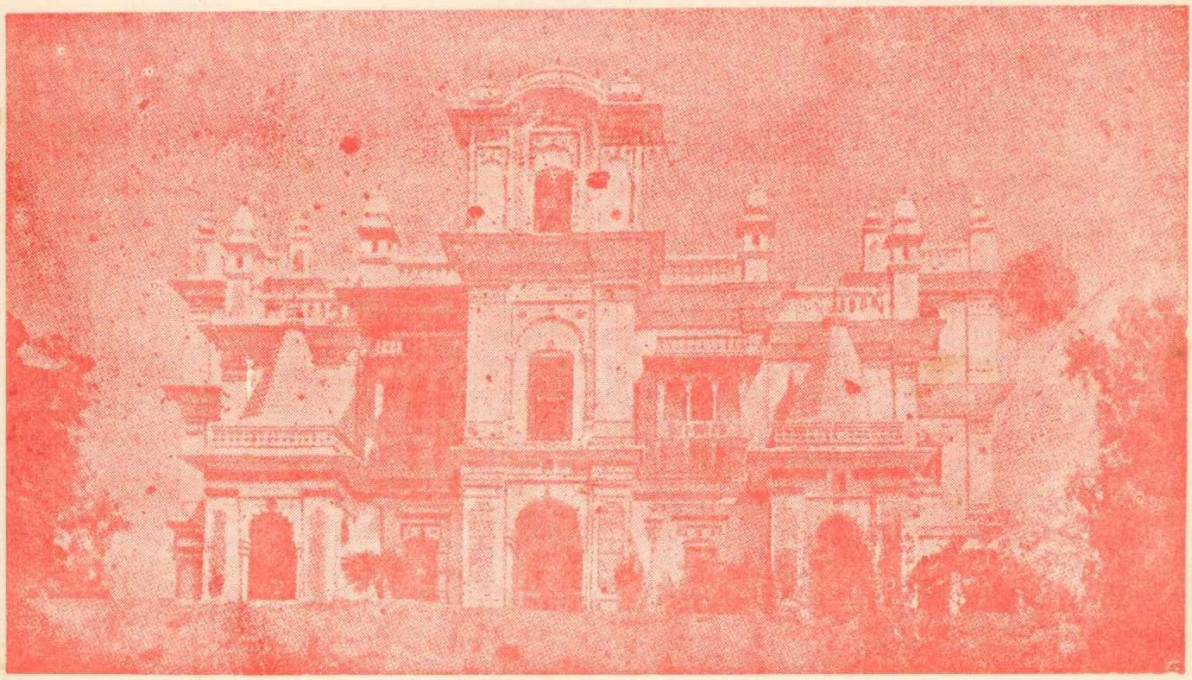

(Geeta Bhawan Trust Building)

कुरुक्षेत्र में 11 सितम्बर 1988

(समय प्रातः 7-29 से 8-53 बजे तक)

सूर्य ग्रहण पर्व पर भेंट

प्रकाशक :— श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति (पंजीकृत)

SHRI KURUKSHETRA RESTORATION SOCIETY (Regd.) 1921

Office : Gita Bhawan Trust Building, KURUKSHETRA (Haryana)

Late L. Diali Ram Ji Chopra of Patiala
who formed the society in 1918

स्वर्गीय श्री गिरधारी लाल जी चोपड़ा जिन को सेवाएं कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति से भलाई नहीं जा सकतीं, जिनकी स्मृति में समिति ने इनकी प्रतिमा, गीता भवन, ट्रस्ट बिलडिंग में लगाने का निचश्य किया हुआ है।

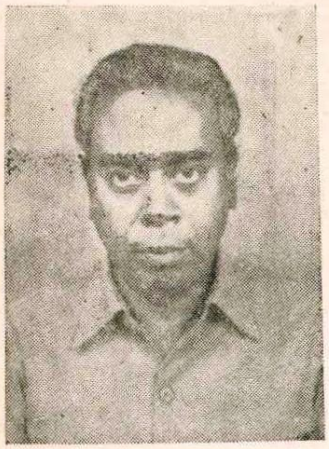

Sh. RAJ KUMAR GUPTA
President
s/o Sh. N.R Gupta
926/1. Deep Nagar,
Ludhiana

BHAGAT TULSI RAM
Gote Wale
Chowk Fort, Patiala
who is serving in society sincerely from last 32 years for its uplifting welfare.

卐 ॐ 卐

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति, गीता भवन, कुरुक्षेत्र

(ब्रह्म टिल्ला ब्रह्म सरोवर के पावन तट पर)

आदरणीय महोदय,

श्री भगवान् कृष्ण जो की अपार कृपा से कुरुक्षेत्र सुक्ष्म से भी अति सुक्ष्म श्री कुरुक्षेत्र की महिमा लिखने का अति सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उस में 360 तीर्थ है। समय के अनुसार कुछ आलोप हो चुके है। समय आयेगा फिर प्रगट होंगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। उदाहरण के तौर पर कुरुक्षेत्र का ब्रह्म सरोवर जिसके सम्बन्ध में इतिहास बतलाता है। कि सृष्टि की रचना के समय श्री ब्रह्मा जी ने इसी सरोवर में हवन कियाथा। सभी देवता पधारे थे। समय के अनुसार वह एक छोटी सी छपड़ी बन गई। महाराजा कुरु को ऋषि को शराफ था कि आप रात्री को शिला बन जाओगे और सूरज निकलने पर चेतना आयेगी एक समय महाराजा कुरु शिकार के पीछे दोड़े। और शिकार छपड़ी में अलोप हो गया। राजा ने बाण मारा जब राजा को शिकार न दिखाई दिया तो उसने अपना तीर छपड़ी के कीचड़ से निकाला। जहां जहां राजा के उंगलियों में गारा लगा रात्री को उनमें जान थो। राज पंडितों ने कहा के राजन उस छपड़ी पर हम सब चलते है सभी वहां गए। राजा से प्रार्थना की कि यह कीचड़ अपने सारे बदन पर लगा लें। जिससे के ऋषि का शराफ दूर हो गया। राजा ने लड़के को गद्दी देकर आप इस छपड़ी की खोज में निकल गया खोज करने से मालूम हुआ कि यह ब्रह्म सरोवर है राजा ने सोने का हल बनाकर एक आर शंकर महाराज जी से नन्दी कर लिया दूसरी और यमराज जी से भैंसा लिया। भैंसा लेकर हल चलाने लगा। राजा के अंथक मेहनत की विष्णु भगवान परीक्षा लेने आए। राजन तू किया चाहता है। इस भूमि का नाम धर्म भूमि हो यही मेरी इच्छा है। विष्णु भगवान ने कहा बीज कहां है। मेरा शरीर है। पहले राजा ने दाई पूजा खड़ी की श्री भगवान ने सुदर्शन चक्कर से टुकड़े-टुकड़े करके 48 कोस में फैंक दिये। इसी प्रकार बाई पूजा मस्तक, भगवान ने प्रसन्न होकर राजन को जीवित किया। ह राजन्! इस भूमि का नाम धमक्षत्र होगा। श्री गीता जो के पहले अध्याय के पहले श्लोक में

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रः समवेता ईशा ममता।
पाण्डवः अश्चेय कि कुरुतव चश्या।

इसके अतिरक्त इस भूमि पर अनेक ऋषि-महाऋषि तप करते चले आ रहे है 1918 में स्व० दियाली राम चौपड़ा जा ने इस 48 कोस की भूमिका का उद्धार करने का मन संकल्प लिया और 1921 में कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति का उद्धार करके रजिस्ट्रडो करवाई। उस समय ब्रह्म

सरोवर में मिट्टी ही मिट्टी थी और यात्रीयों के स्नान के लिए जल नहीं था। लाला जी ने यह सारे घाटों से ४०-४० फुट लम्बाई में मिट्टी खुदवाई और जल के लिए 14 मील दूरी पर चतुरंग नदी थी जिससे भगवान देव चन्द आदि बड़े २ कमिश्नरों को सोसाईटी का सदस्य बनाकर गांवों के जमीदारों से प्रार्थना करके चतुरंग नाले का निर्माण किया। जिससे वर्षा के जल से चारों और स्नान के लिए जल होता था और दो तरफ घाट बनाएं ब्रह्म सरोवर के दक्षिण तथा पूर्व में घाट बनवाएं। 1956 में कुछ अन्य लोगों ने तीर्थ का नाम बदल कर पश्चिम में घाट बनवाने आरम्भ किये। परन्तु तीर्थ द्वारा पण्डितों सोसाइटी के द्वारा वह पूर्ण न हो सके। श्री गुलजारी लाल नन्दा भूतपूर्व गृहमन्त्री भारत सरकार सभापति भारत सरकार के ऊपर ब्रह्म सरोवर में स्नान करने पधारे! सोसाइटी के लोगों ने प्रार्थना की कृपया इस ब्रह्म सरोवर को उत्तम बनाने में आप समर्थ है। श्री नन्दा जी ने सोसाइटी की प्रार्थना स्वीकार करते हुए कुरुक्षेत्र विकास मण्डल का निर्माण किया और उसके द्वारा ब्रह्म सरोवर में नये तरीके से घाट तथा भवन शौचालय व स्नान घर का निर्माण किया जिस पर 2 या 2½ करोड़ का खर्च हुआ, इस के अलावा कुरुक्षेत्र में केवल ब्रह्म सरोवर का ही नहीं 48 कोस का जीर्णोद्धार करने में तत्पर है।

सोसाइटी के द्वारा बनाए गये घाटों को तोड़ने के लिए विकास मण्डल ने योजना बनाई तो सोसाइटी के कार्यकर्त्ता, श्री नन्दा जा अधीक्षक विकास मण्डल को यह वचनबद्ध करके कि सनातन धर्म की परम्परा कायम रहेगी। विकास मण्डल जनता का सम्भालेगा। शिकार मछली पकड़ना आदि हमेशा वर्जित रहेगा। सोसाइटी ने घाट तोड़ने की आज्ञा दे दी अब भो विकास मण्डल उसी ऋण को निभाता आ रहा है और निभाता रहेगा। यह उनकी अति कृपा है। कुरुक्षेत्र के मुख्य सरोवर तथा धर्मशालाओं के नाम :

ब्रह्म सरोवर, सन्निहित सरोवर, ज्योतिसर, इसके अतिरिक्त गोता भवन, जय राम बिद्या पीठ, गोढ़ियां मठ, गीता धाम, गुदड़ बाबा, कृष्ण धाम, दोनों बिरला मन्दिर निर्माण है।

गीता भवन में इस समय लगभग 90 कमरे हैं, जिसमें से 65 कमरे गीता धर्मशाला के रूप में यात्रीयों के ठहरने के लिए है और कमरों के नीचे बड़ी दरी, छत पर पंखा और सर्दियों के लिये कम्बल का बहुत प्रबन्ध है। 11½ से 12½ तक हर रोज मुफ्त भडारा चलता है लगभग 100 साधु ब्राह्माण तथा गरोब भोजन करते है। अन्ध-विकलांग को सभी सहुलियत दो जाती है। जिसके कपड़े, भोजन तथा बिस्तर का पूरा प्रबन्ध है। वामन पुराण में लिखा है कि राजा बली को राजधानी अमीन जिसका आजकल स्टेशन भी हैं। जो स्टेशन से 20-25 कि०मी० है। यहीं वामन भगवान ने बलि से ब्राह्माण बनकर तीन कदम भूमि मांगी थी एक कदम में सारी पृथ्वी नाप ली थी। जिसके फलस्वरूप दो कदम में सारा ब्राह्माण मांग लिया। तीसरा कदम रखने के लिये बलि से पूछा गया कि वह तीसरा कदम कहां रखे! मेरा शरीर उपस्थित है।

जहां भी जी चाहे वही रखो। वामन भगवान ने बलि को पाताल भेज दिया और पाताल का राज्य प्रदान किया। सन्त-महात्माओं के आग्रह पर वामन भगवान का मन्दिर अवश्य बनना चाहिए। क्योंकि दूर तक कोई नहीं है। स्व० महारानी कीर्ति कुमारी रीवा स्टेट गीता भवन में भव्य मन्दिर निर्माण हुआ। इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र से 39 कि: मी: माल ग्राम में फल्गू तीर्थ है। जब भादों की सोमवती अमावस आती हैं तो लाखों की संख्या में अपने पितृ के तर्पण करवाने आते है इसका इतिहास इस प्रकार है। गयासुर बहुत बल शाली पराक्रमी द्वैत्य था। वह पृथ्वी पर लेट गया। पृथ्वी कम्पन करने लगी दु:खी हो कर देवताओं के पास गई। सभी देवता विष्णु भगवान के सहित गयासुर के पास आए। उससे कहा कि तुम क्या चाहते हो। गयासुर ने कहा कि मेरे शरीर पर शिला रखा दो। शिला रखने पर और भी वजन रख दो। गयासुर से कहा गया आप प्रसन्न हो आप जो मांगगे वह हम देंगे! जब तक सृष्टि है मेरा नाम रहे भगवान ने तथास्तु कह कर वरदान कहा कि इस स्थान का नाम गया रख दिया देश भर के यात्री से यहां गया करवाने आऐगे। उनके पित्री का उद्धार होगा वह नर्क से स्वर्ग में जायेगें। गयासुर प्रसन्न हो गया। कहने लगा मेरे तीन कन्या है सोमा, धोमा, भोमा जो मेरे से जीतेगा। तीनों कन्याओं का विवाह उससे करुंगा। फल्गु ऋषि ने फल्की वन में गयासुर से जीतने के लिए घोर तप किया देवता ने वरदान दिया कि तुम जीतोगे वह जीत गया! तीनों कन्याओं का विवाह फल्क ऋषि से कर दिया मगर ग्राम वासियों ने प्रार्थना की आप दहेज में क्या दोगे। गयासुर ने उत्तर दिया कि मेरे पास ब्राह्माण्ड की माया है जो मांगोगे दूंगा क्योंकि गया जी राज्य स्थान की हज़ारों कि०मी० दूरी थी! उन्होंने कहा कि हम गया जी नहीं जा सकते आप बताओ कि आप फल्की बन फल्गू में कब आओगे। जब भादों की सोमवती, अमावस्या होगी उस वर्ष गया से नहा धोकर फल्गू में आऊंगा। फल्गु तीर्थ में स्नान करके जो यात्री अपने मित्रों का पिण्डदान करवायेगे उसका फल मेरे जैसा होगा। हमें अभी 11 अक्तूबर को फल्गू का पुण्य आ रहा है। यात्रीयों को मालूम ही है कि श्री गया जी में फल्गू तीर्थ है।

निवेदनम

देवताओं और ऋषियों की इस पवित्र भूमि का अग-प्रत्यंग सदियों से पवित्रता और महानता का सन्देश देता आ रहा है। यहां के पर्वत-नदियां, सागर संगम, तीर्थ-व्रत आदि आज भी किसी न किसी रूप में हमें अपनी महानता का आभास कराते हैं।

'शंकर: शं करोतु'

देवाधिदेव भगवान शिव के असंख्य स्थान इस धरती पर आज के कालिकाल में भी विद्यमान हैं। कुछ स्थान प्रकृति निर्मित हैं तो कुछ मानव निर्मित। प्रकृति निर्मित स्थानों के साथ कुछ न कुछ गाथाएं जुड़ी है और ऐसे ही स्थानों का आज महत्व अधिक है। कुरुक्षेत्र भूमि

तो पवित्र है ही उसमें भी सरस्वती नदी पवित्र है और इसके तटवर्ती तीर्थ तो और भी पवित्र माने गये। देवसरिसा सरस्वती के तट पर कुरुक्षेत्र भूमि में जगत्पति भगवान शिव के दो स्थान अत्यन्त प्राचीन हैं प्रथम स्थाणु तीर्थ व द्वितीय अरूण संगम तीर्थ। स्थाणु तीर्थ तो वर्तमान थानेसर नगर में है और अरूणा संगम तीर्थ पृथदक् क्षेत्र के वर्तमान उरणाय ग्राम में विद्यमान है। दोनों ही तीर्थ महान ऋषियों द्वारा सेवित हुए। श्री स्थाणु तीर्थ का परिचय देने के लिए पुस्तक प्रकाशित हो चुकी। अत: यहां अरूणा सगम तीर्थ का परिचय ही पाठको के लिए प्रस्तुत है :—

श्री अरूणा संगम तीर्थ की महिमा महाभारत, वामन पुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्मावर्त पुराण स्कन्द पुराण,पद्म पुराण आदि ग्रन्थों में वर्णित हैं। तीर्थ का नाम अरुणा संगम क्यों पड़ा ? वहां भगवान शिव की स्थापना क्यों हुई ? वहां की गई भक्ति से किस किस का उद्धार हुआ आदि बातों का स्पष्ट वर्णन महाभारत के वनपर्व व शल्यपर्व में मिलता है। तीर्थ का नाम अरुणा संगम पड़ने की कथा महाभारत में इस प्रकार है :—

धर्मात्मा बलदेव जी की तीर्थ यात्रा के प्रसंग में सरस्वती उपाख्यान के अर्न्तगत जनमेजय जी वैशम्पायन जी से प्रश्न पूछते हैं कि हे प्रभो ! वशिष्ठापवाह तीर्थ में सरस्वती के जल का भयकर वेग कैसे हुआ ? सरस्वती ने महामुनि वशिष्ठ को क्यों बहाया ? उन दोनों ऋषियों का बैर कैसे हुआ ? वशम्पायन जी ने कहा-महर्षि विशिष्ठ व विश्वामित्र में प्राय: तपस्या को होड लगती थी। इसी होड के कारण दोनों में बहुत बर हो जाता था। सरस्वती के तट पर स्थित स्थाणु तीर्थ के पूर्व भाग में महर्षि वशिष्ठ व पीछे पश्चिम की और महर्षि विश्वामित्र का आश्रम था। वे दोनों प्रतिदिन तप की होड़ लगाकर कठोर तप करते थे। वशिष्ठ जी तप में सदैव आगे निकल जाते। ऐसी स्थिति में विश्वामित्र चिन्तित रहने लगे। इस चिन्ता में ही उनके मन में एक विचार आया कि महर्षि विशिष्ठ को समाप्त कर दिया जाये। इसके लिए उन्होंने एक युक्ति सोची की सरस्वती के द्वारा तप के धनी वशिष्ठ को अपने पास बुलाकर मार डालूंगा। विश्वामित्र ने शीघ्र सरस्वती का स्मरण किया तो सरस्वती ऋषि के सामने आकर खड़ी हो गई और ऋषि से निवेदन करने लगी प्रभो ! बताइये मैं आपकी कौन सी आज्ञा का पालन करूं। तब कुपित हुये मुनि ने कहा-वशिष्ठ को शीघ्र यहां ले आओ, जिससे मैं आज उनका वध कर सकूं। सरस्वती ऐसा सुनकर बहुत दु:खी हो गई। तब ऋषि ने कहा-तुम बिना कोई विचार किये वशिष्ठ को मेरे पास ले आओ। सरस्वती विश्वामित्र की पाप पूर्ण चेष्ठा को जानकर, न चाहते हुए भी वशिष्ठ के पास गई। वशिष्ठ ने उसके मन की बात जानते हुए भी उससे दु:ख का कारण पूछा। सरस्वती ने विश्वामित्र की कुचेष्ठा का वर्णन किया। इस तरह अब वह दोनों ऋषियों के शाप के भय से वह डरने लगी। तब वशिष्ट ऋषि बोले-देवि तुम तेज गति से मुझे बहाकर ले चलो और अपनी रक्षा करो नहीं तो विश्वामित्र तुम्हें शाप देंगे। इस लिए तुम

कोई दूसरा विचार न करो। सरस्वती ने भी वशिष्ठ की नेक राय मानकर उन्हें जल में प्रवाहित किया। ऋषि वशिष्ठ सरस्वती की स्तुति करने लगे। इतने में विश्वामित्र का आश्रम आ गया। इस तरह सरस्वती ने ऋषि से निवेदन किया कि वशिष्ठ ऋषि उपस्थित है। सरस्वती द्वारा लाये गये वशिष्ठ को समाप्त करने के लिये ज्यों ही विश्वामित्र शस्त्र लाने गये त्यों ही सरस्वती ने दोनों ऋषियों के वचनों को पूरा कर लेने के बाद अब वशिष्ठ जी को फिर पूर्व की ओर बहाया। मुनि वशिष्ठ को अपने से दूर बहाया देख कर विश्वामित्र पुनः अधिक कुपित हो उठे और बोले-सरस्वती। तुम मुझे धोखा देकर फिर चली गई इस लिए अब तुम जल की जगह रक्त बहाओ जो राक्षसों को अधिक प्रिय है। विश्वामित्र के शाप से इस तरह सरस्वती एक साल तक रक्तमिक्षित जल बहाती रही। तदनन्तर ऋषि, देवता, गन्धर्व और अप्सरा सरस्वती को उस अवस्था में देखकर अत्यन्त दुःखी हुए।

वहां रक्तमिश्रित सरस्वती के पास अनेक राक्षस आ पहुंचे और इच्छानुसार रक्त पी कर इसी क्षेत्र में सुख पूर्वक निवास करने लगे। कुछ समय के पश्चात् अनेक ऋषि मुनि सरस्वती के तट पर तीर्थ यात्रा के लिए आये। अन्य तीर्थों में होते हुए जब वे इस तीर्थ में पहुंचे तो वहां रक्त की धारा बहती देखकर अत्यन्त दुःखी हुये। उन्होंने सरस्वती में इसका कारण पूछते हुए कहा हे कतयानि तुम्हारा यह-भाय रक्त को क्यों बहा रहा है। हम इसके सुधार का कोई उपाय सोचेंगे। तब सरस्वती ने बड़ी दीनता से वह वृतान्त सुनाया जिसे सुनकर मुनियों ने कहा-देवी हम तुम्हारे कल्याण का पूर्ण प्रयन्न करेंगे। उन्होंने आपस में विचार विमर्श करके यह निर्णय किया कि इस भयंकर शाप से मुक्ति दिलाने के लिए हमें देवाधिदेव भगवान विश्वनाथ महादेव की अराधना करनी चाहिए। उन मुनियों ने निरन्तर तप, उपवास व यज्ञ आदि कठोर साधनाओं के द्वारा भगवान शिव को प्रसन्न किया।

ते सर्वे ब्राह्मणा राजंस्तपेभिर्नियमंस्तथा।
उपवासैश्य विविधैर्यमः कष्टव्रतैस्तथा॥
आराध्य पशुभर्तारं महादेवं जगत्पतिम्।
तां देवो मोक्षयामासुः सरिच्छेष्ठां सरस्वतीम्॥

भगवान शिव ने सरस्वती का उद्धार कर दिया और तब उन ऋषि मुनियों ने वहां महादेव की स्थापना की। अब सरस्वती पहले की ही भांति निर्मल जल बहाने लगी। जिसके कारण वहां बसने वाले राक्षस दुःखी हुए। वे सब उन मुनियों की शरण में गये। वे भूख से पीड़ित होकर बारंबार विनती करने लगे कि आप लोग समस्त लोकों का उद्धार करने वाले हैं और हम पिछले दुष्कर्मों के परिणाम स्वरूप राक्षस हुए हैं। इसलिए हमारा उद्धार कर दीजिए। तब मुनियों ने सरस्वती से उन के उद्धार का आग्रह किया। सरस्वती भी मुनियों की बिनती

सुनकर अपने ही रूपावली अरूणा शक्ति को वहां ले आयी।

महर्षिणां मतं ज्ञात्वा ततः सा सरितां वरा।
अरूणामानयामास स्वां तनू पुरुवषभ।।
तस्यां ते राक्षसाः स्नात्वा तनूस्त्यक्तवा दिवंगतः।
अरूणायां महाराज ब्रहमबध्यापहा हिसां।।

तब उस अरूणा में स्नान करके वे राक्षस अपना शरीर छोड़ कर स्वर्गलोक को चले गये। क्योंकि यह अरूणा ब्रह्महत्या का भी निवारण करने वाली है।

कलैत में जो के कैथल के नज़दीक है।

वहां माता कातयानी दुर्गा का मन्दिर है। कलप ऋषि का सरोवर है विशेष बात यह है कि माता कातयानी का मुख दक्षिण में है क्योंकि दक्षिण में श्री कपिल मुनी जी का सरोवर है माता कातयानी ने उस समय कहा था कि मेरा मुख दक्षिण में हो ताकि मैं कपिल मुनी के सरोवर के दर्शन करती रहूं। महाराजा सालवान जिनका समत आजकल भी चल रहा है। कातयानी देवी के साथ दो शिव मन्दिर बनवाये थे। उसको विशेषता यह है कि उस मन्दिर में न ही गारा, न ही सीमेन्ट, न ही चुना आदि बिल्कुल नहीं, केवल इटों की रगडाई से बना हुआ है। इतना पुराना होने पर भो आजकल अच्छी हालत में है। इसके इलावा माई का मन्दिर और रुड का मन्दिर है। इत ब्रह्म का नाम कलैत, कपिल ऋषि के नाम से ही पड़ा था।

——

LUNGER FDR 501/—

109. Smt. Kamla Wati mother & Sh. Charan Dass Father (Amargarh) Through son Sh. Ravinder Kumar, Arna Barna Chowk, Patiala

Shri Kurukshetra Restoration Society (Regd. 1921)

Geeta Bhawan, KURUKSHETRA.

CHAIRMEN :	Sh. Amarjeet Chopra, Retired Session Judge 903, Tagore Nagar, Ludhiana Ph. 34492
PRESIDENT :	Sh. Raj Kumar Gupta, 926/1 Deep Nagar, Civil Lines, Ludhiana
VICE PRESIDENTS :	Pt. Omkar Nath Tiwari, Kacha Gher, Kurukshetra.
	Sh. Ramdhari Singla, Karyana Merchant, Samana.
	Seth Sarwan Kumar Aggarwal c/o Aggarwal Rice Mill,
	(Puna Mall Nathu Ram) Commission Agent, Cheeka Mandi
	Sh. Dev Raj c/o M/s Dev Raj & Sons, Commission Agent, Samana
GENERAL SECY	Sh. Devi Dass Sharma M.A.,LL.B. 4997/1, Arorian Street, Patiala.
SECRETARY :	Sh. Jiwan Lal Jain 2335/1 Sath Ghara Street, Patiala
JOINT SECRETARY :	Sh. Kewal Krishan Gupta, 2305!1, Sath Ghara Street, Patiala
	Sh. Harinder Kumar Aggarwal, Tea Traders, Arna Barna Chowk, Patiala.
TREASURE :	Sh. Vinod Kumar Goyal c/o M/s Pyare Lal Jagdish Kumar Anaj Mandi Nabha Gate, Patiala.
DHARAM PARCHAR SECRETARY :	Sh. Tulsi Ram Bhagat Gote Wale, Qila Cnowk, Patiala Ph. 72241
PROPAGANDA SECRETARY :	Sh. Charan Dass Thekadar Arna Barna Chowk, Patiala
LEGAL ADVISER :	Sh. Ram Sarup Jain Advocate 844, Urban Estate, Ambala City
EDITOR :	Sh. Shiv Kumar Gupta, 10-D, Model Town, Patiala.
MANAGER & EXCUTIVE MEMBER :	Sh. Brij Lal Mittal 1108, Milap Nagar Hissar Road, Ambala City-135003

EXCUTIVE MEMBERS : Sadhu Ram Saraf Main Bazar, Kurukshetra

Sh. Mansa Ram Chopra, Sadar Bazar, Kurukshetra.

Sh. Mohan Lal Mittal c/o M/s Mohan Lal Sudarshan Kumar, Bartan Wale, Samana

Sh. Om Parkash Aggarwal
228-A, Ibrahim Mandi, Karnal Ph. 3428

Sh. Devi Dass Johar, 555, Gurbax Colony, Patiala.

Sh. Ved Parkash c/o M/s Hira Lal Ved Parkash, Dhuri

Sh. Sham Lal Garg, Garg Enterprises,Katra Magni Ram, Kaithal

Sh. Roda Ram Goldsmith near Gandhi Ground, Samana Mandi

Sh. Gauri Shanker Ganesh
Dry Cleaners, Cinema Road, Cheeka Mandi

Sh. Jiwan Lal Bansal
c/o M/s Paras Ram Madan Lal C/A Samana

Sh. Mohinder Pal Anand Soap Factory, Amargarh (Sangrur)

Sh. Baldev Raj Mittal Vice President
Market Committee, Bhawanigarh (Sangrur)

Sh. Amar Nath c/o M/s Amar Nath Chaman Lal C/A Patran

Sh. Suraj Bhan c/o Gopal Oil Mill, near Bus Stand, Nabha

Mahant Murari Lal Gopal Mandir Patiala Gate, Nabha

Sh. Jai Pal, Sath Ghara, Street, Patiala

Doc. Rajinder Kumar Sharma, Press Reporter, Pehwa.

Sh. Janeshar Dass Jain, Railway Road, Malerkotla.

Function Through Society :

1. Lunger
2. Gita Dharamsala
3. Andh and Biklang Ashram

——

LIST OF PERMANENT MEMBERS OF Rs. 501/- (FDR)

1. Smt. Puni Devi w/o Late Bhagwan Dass Jain, Samana.
2. Smt Lajwanti Devi
3. Sh. Piara Lal Bansal s/o Nathu Mal Bansal, Ghanaur
4. Smt. Dhanwanti Devi M/o Sh. Sat Pal Singla & Sh. Om Parkash Singla, Ghanaur.
5. Sh. Ram Saran Dass s/o Sh. Radha Lal, Ghanaur.
6. Smt. Sowti Devi w/o Sh. Ram Saran Dass, Ghanaur.
7. Smt. Chanan Devi w/o Late Sh. Krishan Chand Vaidya c/o Sh. Sudhir K., Ghanaur.
8. Smt. Champa Wati w/o Shanti Parkash Bansal c/o M/s Paras Ram Madan Lal C/A Samana.
9. Late Smt Kaushalya Devi w/o Sh. Khajanchi Lal c/o M/s Khajanchi Lal Jai Bhagwan Gur Mandi, Patiala.
10. Mata Ganeshi Devi w/o Late Lala Rounaq Ram c/o M/s Rounaq Ram Tara Chand Gur Mandi, Patiala.
11. Vijay Kumar s/o Late Lajpat Rai c/o M/s Lajpat Rai Sukhdev Ram Gote Wale, Dhuri.
12. Late Sh. Shanker Dayal Seth s/o Late Sh. Nand Lal Seth c/o Sh. O.P. Seth, Bhatinda.
13. Late Lala Banarsi Dass through his son Nasib Chand Mittal, Samana.
14. Late Lala Paras Ram c/o M/s Patiala Mill Store, Samana.
15. Sh. Om Parkash Gupta Advocate Kothi No. 7 A/13 Pipli Road, Kurukshetra.
16. Sh. Devki Nandan Gupta, 272/B, Sunait, Kurukshetra
17. Anguri Devi through Jai Kumar Grandson. Amargarh.
18. M/s Bansal Boot House, opp. Gita High School, (Kurukshetra)
19. Smt. Parmatma Devi w/o Sh. Rameshwar Dass Bajaj Misri Bazar, Patiala.
20. Sh. Jagdish Chand Bansal and Smt. Shanti Devi, Patel Nagar, New Delhi.
21. Sh. Prem Chand Mehta, Mehta Niwas, Mohan Nagar, Kurukshetra.
22. Late Lala Janki Dass Bajaj through Sh. Pershotam Dass Singla, Samana
23. Smt Ram Piari w/o Late Sh. Samer Mal, Man Singh Ka (Raj.)

24 to 27. Late Sh. Raja Ram Goyal throught Sh. Jagdish Rai Singla c/o M/s Maghi Ram Chanan Ram, Samana, **4 FDR (Rs. 2004)**

28. Smt. Lajwanti w/o Dina Nath c/o Sh. Sadhu Kumar, Ghanaur.
29. Late Sh. Badri Nath, Wet Ganj B-4/747, Ludhiana.
30. Sh. Mohan Lal c/o M/s Mohan Lal & Co., Ambala City.
31. Sh. Sukh Ram Gupta & his wife Dhan Devi Parents of Sh. Hem Raj Gupta, Samana.

32. Sh. Ram Ji Dass Raja Ram, Amargarh
33. Smt. Juni Devi w/o Sh. Ganga Ram Basoli, Rajpura (Ghanaur)
34. Sh. Surinder Kumar s/o Sh. Charan Dass Gupta, Kurukshetra
35. Sh. Dharam Pal s/o Sh. Babu Ram, Amargarh.
36. Sh. Hem Raj, Amargarh
37. Sh. Chhaju Ram Sham Lal, Amargarh
38. Smt. Saroj Rani c/o Mohinder Kumar Mohan Lal, Amargarh
39. Sh. S.C. Giroto Xen PWD & B&R Colony, Kaithal
40. Smt. Parkash Wati w/o Sh. Walaiti Ram, Ludhiana
41. Sh. Jiwan Lal, A-Tank, Patiala
42. Ram Jan Sat Sangh, Arorian Mohalla Arya Samaj, Patiala.
43. Smt. Kala Rani w/o Sh. Piara Lal Arorian Mohalla, Patiala
44. Sodhi Inder Singh Father of S. Mohinder Singh Sodhi, Gaushala Road, Patiala
45. Sh. Jagan Nath Khosla, Sirhindi Gate, Patiala
46. Sh. Mohan Lal Sham Lal c/o M/s Durga Dass Sham Lal Cloth Merchants, A-Tank, Patiala
47. Sh. Jagan Nath Singla Through Sh. Suraj Bhan Singla Propritor Gopal Oil Mills, Nabha.
48. Late Bhagat Ram Joshi Through Sh. Sat Pal Joshi Loharian Street, Opposite S.D.S.E. High School, Patiala.
49 Som Nath Bansal s/o Sh. Ved Parkash Bansal c/o Paras Ram Madan Lal C/A Sadar Bazar, Samana.
50, Late L. Salig Ram & his wife through K.K. Bansal Son, Samana.
51. Sh. Behari Lal Sood & his wife Piari Devi father Raj & mother Parkash Devi, Brother Jatinder Sood & Satinder Sood through Kumari Raj Sood, Patiala.
52. Smt. Lajwanti w/o Sh. Ami Chand Amargarh.
53. Smt. Sadhu Ram B.K.O. Malerkotla
54. Sh. Behari Lal Sood & his wife Piari Devi, Father Raj & Mother Parkash Devi, Brother Jatinder Sood & Satinder Sood through Kumari Devi Sood, Patiala.
55. Justic Late Sh. G.L. Chopra through his son Amarjit Chopra, Ludhiana.
56. Smt. Padma Wati w/o Lala Ved Parkash M/s Hira Lal Ved Parkash, Dhuri.
57. Mrs. Nirmal Kanta w/o Late Sh. Pal Kheterpal, Ambala
58. Late Sh. Sham Lal Jain through his son Jiwan Lal Jain, 2335/1 Sath Ghara Street, Patiala.
59. Sh. Harish Chand Kapila c/o Doc-Ramesh Kumar Kapila, B-Tank, Patiala.

——

SHRI GITA BHAWAN TRUST (Regd.)

Gita Bhawan Trust Building, KURUKSHETRA.

CHAIRMAN :	Sh. Amarjeet Chopra, Retired Session Judge 903, Tagore Nagar, Ludhiana Ph. 34492
VICE-CHAIRMAN :	L. Sadhu Ram Saraf, Main Bazar, Kurukshetra.
SECRETARY :	Sh. Devi Dass Sharma M.A.,LL.B. 4997/1 Arorian Street, Patiala
TREASURE :	Bhagat Tulsi Ram, Gote Wale, Qilla Chowk, Patiala.
TRUSTEE :	Sh. Ram Sarup Jain, Advocate, Ambala Sh. Mansa Ram Chopra,Sadar Bazar, Kurukshetra Sh. Niranjan Lal Mahajan Sath Ghara, Patiala Sh. Onkar Nath Tewari, Kachha Ghera, Kurukshetra Sh. Raj Kumar Gupta, 926/1, Deep Nagar, Ludhiana.

अन्ध–विकलांग आश्रम, गीता भवन, कुरुक्षेत्र

चेयरमैन :	श्री अमरजीत चोपड़ा, रिटायर्ड सैशन जज, गीता भवन ट्रस्ट, कुरुक्षत्र
प्रधान :	डा० (श्रीमती) जीवन लता दुरेजा, कुरुक्षेत्र
सीनीयर उप-प्रधान :	श्री राज कुमार गुप्ता, लुधियाना
उप-प्रधान :	श्री आनन्द प्रकाश विज, कुरुक्षेत्र
सचिव :	श्री जीवन लाल जैन, पटियाला
संयुक्त सचिव:	प्रो० राम यश, अम्बाला शहर
कोषाध्यक्ष :	पं० काशी राम, कुरुक्षेत्र
संचालिका :	कु० फूला देवी धवन, अम्बाला शहर
सजोजक :	भक्त तुलसी राम, पटियाला
सदस्य कार्यकारिणो :	लाला साधु राम सर्राफ, कुरुक्षेत्र
	पं० ओंकार नाथ तिवाड़ी, कुरुक्षेत्र
	श्री शाम लाल, कैथल

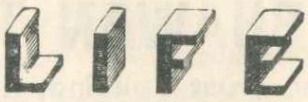

What GITA Says About Life

Life is a Challange	Meet it
Life is a Gift	Accept it
Life is an Adventure	Dare it
Life is a Sorrow	Overcome it
Life is a Tragedy	Face it
Life is a Duty	Perform it
Life is a Game	Play it
Life is a Mystry	Unfold it
Life is a Song	Sing it
Life is an Opportunity	Avail it
Life is a Journey	Complete it
Life is a Promise	Fulfil it
Life is a Love	Enjoy it
Life is a Beauty	Praise it
Life is a Spirit	Realise it
Life is a Struggle	Fight it
Life is a Puzzle	Solve it
Life is Goal	Achieve it

श्री गणेशाय नमः

❀ श्री कुरुक्षेत्र तीर्थ दर्शन ❀

प्रथम खण्ड

कुरुक्षेत्र माहात्म्य-कल्याण गोरखपुर 31 जनवरी 1957 के आधार पर :

श्लोक

कुरुक्षेत्र गमिष्यामि कुरुक्षत्र वसाम्यहम् ।
य-एवं-सतत ब्रूयात् सोऽपि पापैः प्रमुच्यते ॥
पासंवोऽपि कुरुक्षेत्रे वायुना समुद्रीरिताः ।
अपि दुष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम् ॥
दक्षिणेतु सरस्वत्या दृषवत्युत्तरेण च ।
ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे ॥
मनसाअभिकामम्च कुरुक्षेत्र युधिष्ठरः ।
पापानि विप्रणश्यन्ति ब्रह्म लोकं च गच्छति ॥
गत्वा हि श्रद्धया युक्तः कुरुक्षेत्रं कुरूद्वह ।
फलं प्राप्नोति च तदा राजसूर्याश्वमेधयोः ॥

महा०वन०पर्व०तीर्थ यात्रा
(३९-२-७)

अर्थ

मैं कुरुक्षेत्र में जाऊंगा-मैं कुरुक्षेत्र में बसता हूं जो इस प्रकार सर्वत्र कहता रहता है-वह भी सारे पापों से मुक्त हो जाता है। वायु से उड़ाई हुई यहां की धूलि भी जिस पापी के शरीर पर लग जाती है-उसे श्रेष्ठ गति की प्राप्ति होती है दृषद्वती के उत्तर तथा सरस्वती के दक्षिण तक कुरुक्षेत्र की सीमा बीच है-इसमें जो लोग वास करते हैं-वे मानों स्वर्ग में बसते हैं।

युधिष्ठिर :—जो आदमी मन से भी कुरुक्षेत्र की ओर जाने की इच्छा करता है उसके पाप नष्ट भी हो जाते हैं-और वह ब्रह्म लोक को प्राप्त होता हैं। कुरुकुल श्रेष्ठ! जो श्रद्धा पूवक कुरुक्षेत्र तीर्थ की यात्रा करता है उसे राजसूय, तथा अश्वमेघ, इन दोनों यज्ञों का एकत्र फल प्राप्त होता है।

परातन युग :—

कुरुक्षेत्र का इतिहास वास्तव में संक्षिप्त रूप से भारतीय इतिहास ही है, इस पावन भू क्षेत्र में सरस्वती के पवित्र तटों पर ऋषियों ने सर्व प्रथम वेद मन्त्रों का उच्चारण किया ब्रह्मा तथा अन्यान्य देवताओं ने यज्ञों का आयोजन किया, महर्षि वशिष्ठ तथा विश्वामित्र ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया, पांडवों तथा कौरवों ने इसी को महा भारतीय समर का युद्धाङ्गन भगवान् श्रीकृष्ण ने अपनी गीता का विश्व को अमर संदेश सुनाया तथा महर्षि वेद व्यास जी ने इसी से सम्बन्धित महा भारत के प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना की, महाराजा कुरु ने इसी को कृषि क्षेत्र बनाया और पुराणों ने इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया।

इसी प्रसिद्ध और पावन क्षेत्र में समृद्धिशाली हिन्दु सम्राटों को राज्य लक्ष्मी से वंचित किया गया मुसलमान बादशाहों के विशाल साम्राज्य मिट्टी में मिला दिये गये। मराठों तथा सिक्खों की सुदृढ़ शक्तियों का यहीं पर पतन हुआ, प्रत्येक युग में महाराजों तथा साम्राज्यों के उत्थान तथा पतन का इतिहास इसी क्षेत्र में मानव रक्त से लिखा गया। प्राचीन कुरुक्षेत्र न एक पवित्र सरोवर था न एक केवल शहर बल्कि एक विस्तृत भू क्षेत्र था, जिस में बहुत से शहर तथा गांव आबाद थे। यह लगभग ५० मील लम्बा तथा इतना ही चौड़ा था, यह दक्षिण में वर्तमान पानीपत तथा जीन्द स्टेट तक पश्चिम में वर्तमान पटियाला तक पूर्व में यमुना तथा उत्तर में सरस्वती तक फैला हुआ था।

यजुर्वेद ने इसे इन्द्र, वरुण, विष्णु, शिव तथा अन्याय देवताओं की यज्ञ भूमि बताकर वर्णन किया है। महाराजा कुरु के यहां आने से पूर्व यह ब्रह्मा की उत्तर वेदी के नाम से विख्यात था। इसका सुविस्तृत वर्णन वामन पुराण में मिलता है।

कहा जाता है कि महाराजा कुरु ने इस क्षेत्र को शिक्षा का विशाल केन्द्र बनाया। वामन पुराण के २२ वें अध्याय में इसकी उत्पत्ति के वर्णन में कहा गया है, कि महाराजा कुरु पावन सरस्वती के किनारे इस स्थान पर आध्यात्मिक शिक्षा तथा अष्टाङ्ग धर्म की कृषि करने का निश्चय किया। राजा यहां स्वर्ण रथ पर बैठकर आये तथा उस रथ के स्वर्ण से कृषि के लिए हल तयार किया। उन्होंने भगवान् शिव तथा यमराज से क्रमश, वृषभ (बैल) तथा महिष (भैंसा) लेकर खेती आरम्भ की उस समय देवराज इन्द्र ने आकर राजा कुरु से प्रश्न किया राजन ? क्या करते हो, उन्होंने निवेदन किया "मैं अष्टाङ्ग धर्म की कृषि के लिये भूमि तैयार कर रहा हूं"

इन्द्र ने पुन: कहा 'महाराज बीज कहां हैं। राजा कुरु ने निवेदन किया' देवेन्द्र बीज मेरे पास हैं देवराज इन्द्र हंसने लगे तथा अपने स्थान को लौट गये तथा राजा निरन्तर सात कोस भूमि कृषि के लिये प्रतिदिन तैयार करते रहे जब उन्होंने ४८ कोस भूमि तैयार कर ली भगवान विष्णु उन के पास पधारे उन्होंने भी राजा कुरु से प्रश्न किया कि राजन! क्या कर रहे हैं, उन्होंने इन्द्र के प्रश्न करने पर जो उत्तर दिया था इन को भी निवेदन किया भगवान् विष्णु ने कहा! बीज मुझे दे दें मैं उसे आप के लिए बो दूंगा। इतना सुन कर राजा कुरु ने यह कहते हुए कि बीज मेरे पास है अपनी दाहिनी भुजा फैला दी भगवान् विष्णु ने अपने चक्र से उस के सहस्त्र टुकड़े किये और उन टुकड़ों को कृषि भूमि में बो दिया, इसी प्रकार कुरु ने अपनी बाई भूजा दोनों पैर अन्त में मस्तक भी भगवान् विष्णु को अर्पण कर दिया, भगवान विष्णु ने राजा से प्रसन्न होकर उनसे वर मांगने को कहा राजा ने निवेदन किया कि यह सब पुण्य क्षेत्र धर्म क्षेत्र होकर मेरे नाम से विख्यात हो। भगवान् शिव देवताओं सहित यहां वास करें तथा यहां किया हुआ स्नान, उपवास, तप यज्ञ शुभ कर्म किया जाये वह अक्षय हो जाये और जो यहां मृत्यु को प्राप्त हो वह अपने पाप पुण्य के प्रभाव से रहित होकर स्वर्ग को प्राप्त हो भगवान् ने तथाऽस्तु कह कर राजा के वचनों को स्वीकार किया।

अष्टाङ्ग धर्म जिनका वणन ऊपर आया है यह है

जप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान योग तथा ब्रह्मचर्य,

कुरुक्षेत्र में गीता उपदेश का वर्णन महा भारत में आता है कि पावन सरस्वती के तट पर ऋषि गण अपने आश्रमों में सहस्त्रों विज्ञानियों सहित निवास किया करते थे तथा ऋषि आश्रम ही धर्म तथा सस्कृति की शिक्षा के सर्वोत्तम साधन थे वहां यह भी कहा गया

है, कि युद्ध की इच्छा से कौरवो और पांडवो की सेनायें क्रमशः पूर्व एवं पश्चिम की ओर से इस समराङ्गन में प्रविष्ट हुई तथा उन में १८ दिनों तक भीषण संग्राम होता रहा इसी ग्रन्थ के भीष्म पर्व से प्रमाणित होता है, युद्ध के प्रथम दिवस हा जब पांडवों के वीर सेनानी महारथी अर्जुन ने अपने ही भाई बान्धवो को दोनों पक्षों की ओर से युद्ध के लिये तयार देखा, तब युद्ध में कुल सहार के भयंकर परिणाम को सोच कर वे कर्त्तव्य विमुख हो गये तथा उन्होने युद्ध करने से इन्कार कर दिया उस समय अर्जुन के सारथी बने हुये भगवान् कृष्ण ने वेदो तथा शास्त्रों के सार भूत श्री मद्भगवद् गोता रूपी अमृत का पान कराके कठोर कत्त व्य पालन की प्रेरणा की भगवान् कृष्ण ने समराङ्गन के जिस पवित्र स्थान पर गोता का वह उपदेश दिया वह पुण्य स्थान (ज्योतिसर) के नाम से विख्यात हुआ तथा आने वाली संतति के लिये तीर्थ बन गया, इसी घटना का साक्षी यह स्थान वर्तमान कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग पाँच मील दूर पेहवा जाने वाली पक्की सड़क पर स्थित है।

आधुनिक ऐतिहासिक युग :—

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि महा भारतीय युद्ध से लेकर महाराजा हर्ष वर्धन पर्यन्त यह क्षेत्र सांस्कृतिक तथा सामाजिक दोनों ही दृष्टिकोणों से उन्नति के पथ पर था सन ३०० ई० पू० में यूनानी राज दूत मेगस्थनोज ने लिखा है कि लोग रात में घरों के दरवाजे खोल कर सोते है,' चोरी तथा बदमाशी का नाम भी नहीं हैं स्त्रियों का चरित्र उच्च कोटि का है देश में चारों और शान्ति है आर्थिक दशा अच्छी है व्यापार तथा उन्नति में राज्य प्रबन्ध की सहायता प्राप्त होती है लोगों का चरित्र उच्च कोटि का है. बौद्धों के समय में भी कुरुक्षेत्र आर्य संस्कृति (वैदिक सस्कृति) का सर्वोत्तम केन्द्र रहा हिन्दु एव बौद्ध परस्पर मित्र भाव से रहते थे, राजा बौद्ध हो या हिन्दू वह अपनी दोनों प्रजाओं को समान भाव से देखते थे, महा भारत के इस प्राचीन युद्धक्षेत्र का हमारे देश के इतिहास की प्रमुख घटनाओं से घनिष्ठ संबन्ध है, थानेसर पानीपत तरावड़ी कथल तथा करनाल इत्यादि इतिहास प्रसिद्ध युद्ध मदान कुरुक्षेत्र की इस पुण्य भूमि में ही स्थित है ३२६ ईसा पूर्व से लेकर ४८० ईसा के बाद प्रथम तो यह क्षेत्र मौर्य राजाओं के में रहा तत्पश्चात् गुप्त राजाओं का भी अधिकार हुआ जिनका राज्य काल भारतीय इतिहास में (स्वर्ण युग) कहा जाता है। गुप्त राजाओं के राज्य काल में यह क्षेत्र उन्नति के शिखर पर था।

उस समय भी थानेसर ऐश्वर्य शाली तथा वैदिक साहित्य की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र माना जाता था।

हर्ष के दरबारी प्रसिद्ध कवि बाण भट्ट ने अपने ग्रन्थ हर्ष चरित में इस क्षत्र के ऐश्वर्य का विस्तार से वर्णन किया है, उसने लिखा है कि थानेसर सरस्वती नदी के तट पर बसा हुआ तथा धार्मिक शिक्षा तथा व्यापार का प्रसिद्ध केन्द्र हैं वहां का तमाम वायु मंडल वेद मन्त्रों की ध्वनि से परिपूर्ण है महाराजा हर्ष के समय चीनी यात्री ह्यूनसांग भारत भ्रमण के लिये आया था वह सन ६२९ से सन ६४५ तक भारत में उस के उपलब्ध लेखों से तत्कालीन भारत की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है वर्तमान शताब्दी धार्मिक प्रगति का युग है, वदिक धर्म पुन: उन्नति को ओर अग्रसर हो रहा है, निस्सन्देह ही धार्मिक परम्परा ने थानेसर को उत्तरी भारत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने में (हरियाणा प्रान्त) ने अत्यधिक सहायता प्रदान की है :—

इस के बाद कुरुक्षेत्र का इतिहास तो बर्बर आक्रमणों एवं पैशाचिक विनाश का इतिहास है यह पवित्र भूमि बार बार रक्त स्नात हुई और बार वार इस के पवित्र स्थलों पर आततायी आक्रमणकारियों द्वारा हमले किये गये—अब तो जो कुछ शेष तीर्थ है उन का वर्णन किया जा सकता है।

कुरुक्षेत्र के पवित्र स्थान :— इसको भृगु क्षेत्र भी कहते हैं—क्योंकि भृगु ऋषि ने यहां यज्ञों का आयोजन किया था—तथा यह ब्रह्मा जी की उत्तर बेदी के नाम से विख्यात है, पुराणों में उल्लेख आता है कि इस क्षेत्र में किया हुआ दान, तप, इत्यादि १३ गुणी वृद्धि को प्राप्त होता है यानी १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३ × १३।

यदि कोई सज्जन ५-० प्रति दिन दान करे तो १३ दिन में ६५-० की बजाय उसे ८४५-० का फल प्राप्त होगा।

पवित्र वन तथा पवित्र नदियां

वामन पुराण में वर्णन इस प्रकार हैं :—

१. सात वन
२. काम्य वन
३. अदिति वन
४. व्यास वन
५. फलकी वन
६. सूर्य वन
७. मधु वन शीत वन।

सात नदियां :

१. सरस्वती नदी २. वैतरणी नदी ३. आपगा नदी ४. मधु स्रवा नदी ५. कौशिकी नदी ६. दृषद् द्वती नदी ७. हिरण्य वती नदी।

पवित्र सरोवर तथा कूप :—

इसी प्रकार इस क्षेत्र में ४ कूप तथा ४ सरोवर अति पवित्र माने जाते हैं, यहां अधिकांश यात्री स्नानार्थ आते हैं।

पवित्र सरोवर :—

१. ब्रह्म सर २. ज्योतिसर ३. स्थानेश्वर ४. कोलेसर स्नेत।

पवित्र कूप

१. चन्द्र कूप २. विष्णु कप ३. रुद्र कूप ४. देवी कूप।

कुरुक्षेत्र तीर्थों की संख्या ३६० की मानो है परन्तु ऐसे यात्री (दर्शनार्थी कम ही होते हैं जो सभी तीर्थ के दर्शन करने का कष्ट सहन कर सकें निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों पर उतर कर यात्री अधिकांश तीर्थों के दर्शन कर सकते हैं।

थानेसर सिटी, कुरुक्षेत्र, अमीन, कैथल, जींद, सफीदों प्रसिद्ध पेहवा या पृथूदक तीर्थ स्थान के लिये थानेसर से बस सरविस चलती है तथा नरवाना ब्रांच की छोटी रेलवे लाईन पर पेहवा स्टेशन रोड़ से एक कच्ची सड़क जाती है इस स्टेशन से तीर्थ स्थान लगभग आठ मील हैं यहाँ के सातों वनों का अब कोई विशेष अवशेष नहीं रहा-बनों को काट कर अब प्रायः खेतों का रूप दिया जा चुका है अब तो सीमाओं तथा स्थानों का सही पता लगाना असम्भव सा हो गया है फिर भी उन वनों के नामों से वहां गांव बसे हुऐ हैं जिस से इस बात का पता चलता है कि कभी यहां पवित्र वन थे वनों को पहचान अब इस प्रकार की जाती है।

काम्पक वन :—

यहां पर कमोधा गांव है तथा काम्यंक तीर्थ भी है, यह ज्योतिसर से ३ मील दूर पेहेवा जाने वाली सड़क के दक्षिण में है।

आदित्य वन :—

यहां पर अमीन ग्राम है और अदिति तीर्थ भी है अमीन कुरुक्षेत्र से ५ मील दूर देहली

अम्बाला रेलवे लाईन पर स्टेशन है।

ब्यास वन :—

यहां पर बारषा ग्राम है जो करनाल से कैथल जाने वाली सड़क पर है।

फलकी वन :—

यहां पर फरल ग्राम है तथा प्रसिद्ध फल्गू तीर्थ है यह पेहवा रोड रेलवे स्टेशन (छोटी) लाईन के समींप है। (फल्गू कुरुक्षेत्र से १६ मील है।)

सूर्य वन :—

यहां संजूमा ग्राम है तथा सूर्य कुण्ड तीर्थ कहते हैं।

मधु वन :—

यहां मोहिना ग्राम है यह करनाल से कैथल जाने वाली सड़क के दक्षिण में स्थित है।

शीत वन :—

यहां पर सीवन ग्राम है जो कैथल तहसील में है।

इसी प्रकार पवित्र नदियां भी कोई अच्छी हालात में नहीं हैं उनके प्रवाह बन्द हो चुके हैं सिवाये सरस्वती नदो के अन्य नदियों का पता लगाना भी असम्भव हो चुका है सरस्वती नदी बरसात के दिनों में कहीं २ पानी रहता है तथा अन्य ऋतुओं में वह भी सूख जाती है। वह बरसात की मौसम में थानेसर, नरका तारी ज्योतिसर तथा पेहवा आदि स्थानों में बहती है।

ब्रह्म सर तथा संन्निहित सर

थानेसर शहर से दक्षिण पूर्व की दिशा में थानेसर सिटी रेलवे स्टेशन के पास ही दो प्रसिद्ध सरोवर ब्रह्म सर एवं सन्निहित सर हैं—यह कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से लगभग एक मील दूर हैं ब्रह्मसर को हि आजकल कुरुक्षेत्र कहा जाता है महाभारत तथा पुराणों से यह बात प्रमाणित होती है कि ब्रह्म सर किसी समय 8 मील लम्बा तथा 8 मील चौड़ा एक विस्तृत सरोवर था संन्निहित भी जो आज एक पृथक सरोवर है इसी का अङ्ग था, तथा थानेसर ज्योतिसर कालेसर आदि सभी ब्रह्म सरोवर में ही स्थित थे।

कुछ मनुष्यों की यह गलत धारणा हैं कि कुरुक्षेत्र ही वह द्वैपायन सरोवर है—जहां युद्ध के अन्तिम दिन दुर्योधन आकर जल में छिप गया था यथार्थ में वह द्वैपायन एक पृथक् सरोवर है जिसे पाराशर भी कहते है वह थानेसर से लगभग 20 मील है।

सूर्य ग्रहण का मेला

सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में एक बड़ा मेला लगता है जिस में भारत के हरेक

प्रान्त के नर नारी आकर एकत्रित होते हैं, यात्री ज्योतिसर तथा थानेसर भी स्थान तथा दर्शनार्थ जाते है, श्री मद् भागवद् पुराण के दशम स्कन्ध में उल्लेख आते है कि महाभारत युद्ध से पहले सूर्य ग्रहण के अवसर पर भगवान कृष्ण सभी यदुवंशियों सहित द्वारका से कुरुक्षेत्र पधारे थे, उस समय दूर दूर के देशों से राजा लोग यह एकत्र हुए थे और सूर्य ग्रहण के अवसर पर सभी ने स्नान पूजा पाठ तथा धार्मिक कार्य किये थे—यहां सोमवती अमावस्या पर स्नान करने से सब तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त होता है।

ब्रहम सर विभाग

ब्रह्म सर (समन्त पंचक तीर्थ) अब यह कुरुक्षेत्र सरोवर के नाम से जन साधारण में प्रसिद्ध है लगभग 1442 गज लम्बा तथा 700 गज चौड़ी है सरोवर में दो द्वीप है इन दोनों में प्राचीन मन्दिर कथा महत्व के स्थान हैं, छोटे द्वीप में गरुड सहित भगवान विष्णु का मन्दिर है, यह पुल के द्वारा श्रवण नाम मठ के समीप उत्तरी तट से मिला हुआ है तथा एक दूसरा पुल बड़े द्वीप के मध्य में होकर सरोवर के उत्तरी तट से दक्षिणी को मिलाता है, इस द्वीप में आमों के बगीचे हैं कुछ प्राचीन मन्दिरों तथा भवनों के भग्नावशेष हैं साथ ही अति प्राचीन चन्द्र कूप का स्थान है कहते हैं कि यही पर मुगल बादशाह औरगंजेब ने अपने सिपाहियों के रहने के लिये मकान बनवाया था सिपाही तीर्थ में स्नान करने वालों से कर वसूल करते थे जो इसको अवज्ञा करते थे उन्हें या तो गोली मार दी जाती थी या उन से काम करवाया जाता था पुराणों में लिखा हुआ मिलता है कि महाराजा कुरु ने महाभारतीय युद्ध से बहुत पहले ब्रह्मसर सरोवर सर्व प्रथम बनवाया था सन 1948 राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की अस्थियों का एक भाग इस पवित्र सरोवर में बहाया गया था। इसके उत्तरी तट पर प्राचीन मठ मन्दिर तथा धर्मशालायें हैं

१. गोता भवन धर्मशाला
२ जिन में बाबा कमली वाले की धर्मशाला तथा श्रवण नाथ हवेली विशेष उल्लेखनीय है।
३. यहां यात्रियों तथा साधु सन्तों के ठहरने के उत्तम प्रबन्ध हैं इसी के समीप सन्निहित तीर्थ के सामने नाभा हाऊस की विशाल हवेली है आजकल हरियाणा सरकार ने आयुर्वेदिक कालेज खोला हुआ है।

—०—

उत्तरी किनारे के मध्य में गौडीय मठ (बंगाली साधुओं का आश्रम) तथा जय राम विद्या पीठ श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार सोसाइटी कुरुक्षेत्र है जिसे गीता भवन कहते हैं, सरोवर के उत्तर पश्चिम की और समीप ही बिडला जी की और गीता मन्दिर सरोवर के समीप ही और पश्चिम के तट पर सिक्खों का एक गुरूद्वारा है दक्षिणी तट पर एक गुरुद्वारा गुरू नानक देव जी की स्मृति में है गुरु नानक देव जी, गुरु गोबिन्द सिंह जी तथा अन्य सिक्ख गुरुओं ने अपने अपने समय में इस पुण्य भूमि के तीर्थों के दर्शन किये थे।

सन्निहित

यह ब्रह्म सर से बहुत छोटा है इसकी लम्बाई 500 गज़ चौड़ाई 150 गज़ है इस के चारों ओर अब लाल पत्थर के घाट हैं सर्व प्रथम यात्री यही आते हैं सूर्य ग्रहण के अवसर पर बडी संख्या में यात्री यहाँ एकत्रित होते हैं, सरोवर के पश्चिमी तट पर स्वामी गणेशा नन्द जी के प्रयत्नों से लाखों रुपये व्यय करके कृष्ण धाम का निर्माण हुआ है जिस में सस्कृत पाठशाला हैं। सरोवर के पश्चिमी तट के समीप श्री लक्ष्मो नारायण जी का प्राचीन मन्दिर है जो अति सुन्दर है।

थानेसर स्थाण्वोश्वर तीर्थ

यह थानेसर शहर के लगभग 2 फर्लाङ्ग की दूरी पर है यह अत्यन्त ही पवित्र सरोवर है तथा इस के तट पर ही भगवान स्थाण्वीश्वर (स्थाणु शिव) का प्राचीन मन्दिर है पुराणों में विस्तार पूर्वक स्थाणु शिव तथा इस पवित्र सरोवर की महिमा का वर्णन किया है कहा जाता है कि इस सरोवर के कुछ जल बिन्दुओं के स्पर्श से ही महाराजा वेन का कुष्ठ रोग दूर हो गया था, यह भी कहा जाता है कि महा भारत में युद्ध की विजय की कामना से पाण्डुओं ने यहीं पर भगवान शिव का पूजन करके उन से विजय का आशीर्वाद प्राप्त किया था।

चन्द्र कूप

ब्रह्म सर (कुरुक्षेत्र) सरोवर के मध्य में बड़े द्वार पर यह एक पवित्र स्थान है कूप के साथ ही एक मन्दिर है महाराजा युधिष्ठिर ने युद्ध के बाद यहां पर विजय स्तम्भ बनवाया था विजय स्तम्भ अब यहा नहीं है।

भद्र काली मन्दिर

यह माता भद्र काली मन्दिर स्थाणु शिव मन्दिर से थोड़ी दूर पर है कहा जाता है कि युद्ध से पूर्व पाण्डवों ने विजय की कामना से मां काली का पूजन किया तथा यज्ञ किया था, यह भारत वर्ष के 51 देवी देवताओं में से एक है कहा जाता है कि भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र से कट कर दाहिने पैर की एड़ा यहां पर गिर गई थी।

बाण गंगा

यह तीर्थ स्थान ब्रह्मसर (कुरुक्षेत्र) सरोवर से लगभग तीन मील है और एक सड़क इसे ब्रह्मसर से मिलाती है। महा भारत युद्ध में भीष्म पितामह इस स्थान पर शर शय्या पर गिरे थे, तथा उस समय उन के पानी मांगने पर उनकी इच्छा से महारथी अर्जुन ने बाण मारकर जमीन से पानी निकाला जिस की धारा सीधे पितामह के मुख में गिरी यहां पर चारों ओर से बना हुआ सरोवर है तथा एक छोटा सा मन्दिर भी है।

नाभि कमल तीर्थ

यह थानेसर शहर के समीप ही है—कहा जाता है इसी स्थान पर भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न हुऐ कमल से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई थी, यहां पर यात्री स्नान, जप तथा भगवान् विष्णु तथा ब्रह्मा पूजन करके अनन्त फल के भागी होते हैं। सरोवर छोटा परन्तु पक्का बना हुआ है तथा वहीं ब्रह्मा जी सहित भगवान विष्णु का छोटा सा मन्दिर है।

कर्ण का खड़ा

ब्रह्मसर (कुरुक्षेत्र) से लगभग एक मील दक्षिण पश्चिम की ओर मिर्जापुर ग्राम के पास एक टीला है कहा जाता है कि महा भारतीय युद्ध के समय दानवीर कर्ण ने इसी स्थान पर ब्राह्मणों को दान किया था यात्री इस टीले की परिक्रमा करते हैं।

आपगा तीर्थ

कर्ण का खेड़ा के समीप ही यह स्थान एक सरोवर के रूप में है, यह स्थान चारों तरफ से पक्का है परन्तु ठीक देख-रेख न होने से जीर्ण हो चुका है कहा जाता है कि कुरुक्षेत्र के पवित्र मानो जाने वाली नदियों में आपगा नदी यहां से होकर बहती थी जिसका प्रवाह बन्द हो जाने के बाद यहां पर पानी इकट्ठा होकर जलाशय के रूप में परिणत हो गया। यहां पर भाद्रपद कृष्ण १४ को महयाह्न में पितृ तर्पण एवं श्राद करने से पितृ लोक में पितरों की मुक्ति होती है इसी नाम का एक तीर्थ कथल तहसील में भी है।

भीष्म शर शय्या या नरका तारी

यह तीर्थ स्थान कुरुक्षेत्र से पहेवा जाने वाली सड़क के उत्तर में थानेसर से लगभग 1½ मील पर है कुछ मनुष्यों का कहना है कि यही वह स्थान है जहां शर शय्या पर भीष्म पितामह सोये थे यहां के पवित्र सरोवर में स्नान करके पूजा पाठ करते हैं सरोवर चारों ओर से पक्का तथा कुण्ड की शकल में बना हुआ है।

रत्न यक्ष तीर्थ

यह कुरुक्षेत्र के (रेलवे स्टेशन से) लगभग एक मील दूर कुरुक्षेत्र से पिपली जाने वाली सड़क के उत्तर में है - कुरुक्षेत्र का 48 कोस की परिक्रमा पर जाने वाले यात्री अपनी यात्रा यहां से आरम्भ करते हैं, यहां पर एक पवित्र सरोवर है तथा स्वामी कार्तिक तथा रत्न यक्ष का मन्दिर है।

कुबेर तीर्थ

यह भद्र काली मन्दिर से थोड़ी दूर सरस्वती के तट पर स्थित है। यहां कुबेर ने यज्ञों का आयोजन किया था।

मार्कण्डेय तीर्थ

इस स्थान पर ऋषि मार्कण्डेय का आश्रम था उन्होंने इसी स्थान पर तपस्या करके परम पद प्राप्त किया था, यात्री यहां पर स्नान करके सूर्य का पूजन करते हैं।

दधीचि तीर्थ

इस स्थान पर महा ऋषि दधीचि का आश्रम था। यह सरस्वती नदी के तट पर महाऋषि दधीचि ने देवराज इन्द्र के मांगने पर उन्होंने राक्षसों का संहार करने के उद्देश्य से वज्र बनाने के लिए अपनी अस्थियों का दान किया था।

प्राची सरस्वती

यहां से सरस्वती नदी पश्चिम से पूर्वाभिमुख होकर बहती है अब तो केवल एक जलाशय मात्र शेष है आस पास प्रकोन भगवान शेष पड़े हुऐ हैं सुनसान मन्दिर जीर्ण दशा में है यात्री यहां पर पितृ तर्पण करते हैं।

अमीन या चक्रव्यूह

अमीन एक छोटा सा ग्राम है जो एक अति ऊंचे टीले पर बसा हुआ है यह थानेसर से लगभग 5 मील है और देहली अम्बाला रेलवे स्टेशन भी है कहा जाता है कि गुरु द्रोणाचार्य ने महा भारत युद्ध में कौरव सैना की ओर से यहीं हर चक्रव्यूह की रचना की थी, जिस द्वार में अर्जुन युग अभिमन्यु प्रवेश तो कट पाया था किन्तु निकल न सकने के कारण मारा गया था कहा जाता कि अभिमन्यु से ही बिगड़ कर इस नाम अमीन हो गया यात्री इस ग्राम की परिक्रमा करते हैं तथा अन्याय तीर्थों पर स्नान दान तथा दर्शन करते हैं।

इस ग्राम में निम्नलिखित तीर्थ विद्यमान है।

अदिति कुण्ड तथा सूर्य कुण्ड

अमीन ग्राम के पूर्व में सरोवर है जिनमें से एक तो सूखा ही रहता है परन्तु दूसरे में जल भरा रहता हैं अदिति कुछ तथा दूसरा सूर्य कुण्ड कहलाता है यही पर महर्षि कश्यप तथा उनकी पत्नी अदिति का आश्रम था और माता अदिति ने भगवान वामन को पुत्र रूप में प्राप्त किया था, यहां पर एक शिव मन्दिर है जिस में अति प्राचीन हो लाल पत्थर की बनी हुई मूर्तियां रक्खी हैं जो यही के एक स्थान से प्राप्त हुई थी।

सोम तीर्थ

यह एक कच्चा तालाब ग्राम के दक्षिण की और है यह सोम चन्द्र) के यज्ञ का स्थान है यहां लगभग 35 साल पहले दो लाल पत्थर की मूर्तियां जमीन से निकाली गई थी जो लगभग 5 फुट ऊचो है और जिन्हें सूर्य कुण्ड के शिव मन्दिर में प्रतिष्ठित कर दिया गया।

कर्ण वध

अमीन ग्राम के ऊचे टीले के पास हो एक बहुत बड़ी खाई है कहा जाता है कि महा भारतीय युद्ध में जब कर्ण का रण में पहिया जमीन में फंस गया तब अर्जुन ने उसे यही मारा था इसो कारण इस स्थान का नाम कर्ण वध हुआ :—

यह स्थान अमीन ग्राम से लगभग डेढ़ मोल दूर है कहा जाता है कि चक्र व्यूह में अभिमन्यु की मृत्यु का बदला अर्जुन ने जयद्रथ को यहां मार कर किया था यह जय जन्म घर जय द्रथ का अप भ्रंश है यह भगवान वामन का जन्म स्थान है।

पाराशर या द्वैपायन ह्रद यह तीर्थ स्थान वहलोल पुर ग्राम के समीप ही है यह ग्राम कैथल से करनाल जाने वाली सड़क से लगभग ६ मील उत्तर में है एक सड़क गांव से जाकर इस पक्की सड़क से मिलाती है यह कुरुक्षेत्र ब्रह्म सरोवर की भांति अति ही विशाल सरोवर हैं इस के चारों और मिट्टी का किनारा है जो सरोवर की दीवार की तरह घिरे हुये है कहा जाता

है कि महाभारतीय युद्ध मैदान से भाग कर इसी सरोवर में छिप गया था पाण्डवों ने पता लगाकर उसे युद्ध के लिए ललकार सरोवर से बाहर निकला था यह भी कहा जाता है कि महिर्षि पाराशर का आश्रम यही था। फाल्गुन शुक्ला एकादशी को यहां पर बड़ा मेला लगता है यह तीर्थ स्थान थानेसर से दक्षिण में 20-25 मील पार है।

विष्णु पद तीर्थ

यह तीर्थ स्थान पाराशर से लगभग मील उत्तर पश्चिम में सगा ग्राम में है पाराशर से एक सड़क इस ग्राम को जाती है, यहां पर ऋषि विमल ने यज्ञ किया था तथा भगवान विष्णु प कहलाता है यहां बड़ा सरोवर है जिस के तीन और पक्के घाट है तथा भगवान् शिव के मन्दिर है।

विमल तीर्थ

विष्णु पद तीर्थ के समीप ही यह एक ऊंचा टीला है यही ऋषि विमल का आश्रम था यात्री इस टीले की परिक्रमा करते है ऋषि विमल का पूजन करते हैं।

ज्योतिसर तीर्थ

कुरुक्षेत्र को भूमि में ज्योतिसर अति ही पवित्र स्थान है यह श्री मद्भगवतगीता की उपदेश भूमि है इसी स्थान अर अर्जुन को भगवान् कृष्ण ने गीता रूपी अमृत पान कराया था महाराजा हर्ष के समय यह स्थान उनकी राजधानी में ही सम्मिलित था यह वर्तमान थानेसर शहर से तीन मील कुरुक्षेत्र पेहवा जाने वाली सड़क पर हैं तीर्थ की उत्तर दिशा में इसी नाम का एक ग्राम भी बसा हुआ है पतित पावनी सरस्वती नदी इसी के समीप बहती है—

इस स्थान पर अति प्राचीन सरोवर तथा वट वृक्षों के सिवाय अन्य कोई प्राचीन स्मारक नहीं है सरोवर ज्योतिसर अर्थात ज्ञान का स्रोत के नाम से प्रसिद्ध है तट पर खड़े वट वृक्षों में से एक वट अति पवित्र माना जाता है-वह अक्षय वट वृक्ष के नाम से विख्यात है, जो भगवान कृष्ण के गीता उपदेश की घटना का एक मात्र साक्षी माना जाता अन्य एक वट वृक्ष एक प्राचीन शिव मन्दिर के भग्नावशेष पर खड़ा हुआ है (अधिक सम्भव है कि यह मन्दिर थानेसर विध्वंस के समय ही मुसलमानों की क्रोध वृत्ति का शिकार हुआ है) लगभग 150 वर्ष हुऐ कश्मीर के एक नरेश ने शिव मन्दिर का निर्माण करवाया था तथा एक दूसरा मन्दिर पहले का बना हुआ है सन् 1960 स्वर्गीय महाराजा दरभंगा ने अक्षय वट के चारों ओर के चबूतरों को पुनः निर्माण करवा कर पक्का बनवाया तथा एक छोटे कृष्ण मन्दिर का निर्माण किया यहां का पवित्र सरोवर अत्यन्त विशाल लगभग (100 × 500) है- तथा दक्षिण तट से पेहवा जाने वाली सड़क उतरती है सरोवर के उत्तरी तथा पूर्वी तटों पर सुन्दर पक्के घाट बने हुए है:—

यातायात साधन

कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से ज्योतिसर जाने वाले यात्रियों को रिक्शे, तांगे तथा मोटर बसें पर्याप्त संख्या में मिलते हैं कुरुक्षेत्र से पेहवा जाने वाली सभी बसें ज्योतिसर होकर जाती हैं तथा यह तीर्थ स्थान कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशन से 5 मील है।

काम्य तीर्थ एवं काम्य वन

यह सात पवित्र वनों में से एक है—यहीं पर पांडवों ने अपने प्रवास के कुछ दिन बिताये थे-ज्योतिसर से लगभग 2½ मील पेहवा जाने वाली सड़क के दक्षिण में कमाधा ग्राम हैं, काम्यक का अपभंग ही कमोधा है यहां पर ग्राम के पश्चिम में काम्यक तोर्थ है तथा भगवान शिव का मन्दिर हैं चत्र शुक्ला सप्तमी को प्रतिबर्ष यहां मेला लगता हैं।

भूरिसर

भूरिसर असल में अपभ्रंश है यह शब्द भूरिश्रवा है भूरिश्रवा है कौरव पक्ष के योद्धा थे, जिन की मृत्यु इस स्थान पर हुई थो, यह ज्योंतिसर से लगभग ५ मील दूर पश्चिम में पेहवा जाने वाली सड़क पर हैं पवित्र सरोवर तथा शिव का मन्दिर सड़क के उत्तर में है यात्री यहां पर स्नान करके सूर्य का पूजन करते है, इसे सूर्य कुण्ड भी कहा जाता हैं।

पृथूदक (पहेवा)

पृथदक (पेहेवा माहात्मय)

कुरुक्षेत्र को बड़ा पुण्यमह कहा गया है किन्तु इससे भी पुण्यमयी सरस्वती है, सरस्वती से भी उसके तट वर्ती तीर्थ पवित्र है और उन से भी अधिक पृथूदक पुण्यमय है नरातम् पृथूदक बढ़ कर और कोई पवित्र स्थान नहीं है यहां स्नान मात्र से ही नर नारियों द्वारा किये गये पाप चाहे यह अनजाने में किये गये हो शीघ्र नष्ट हो जाते है और उसे अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है, तथा स्वर्ग की प्राप्ति होतो है।

यह सरस्वती नदी के दाहिने तट पर स्थित है थानेसर नगर से यह 10½ कोस दूर है अब इसे पेहवा कहते है, महाराजा पृथु ने अपने पिता की अन्त्येष्टि यहां की थी तथा यह उन्हीं के नाम पर प्रसिद्ध हो गया, यहां अति प्राचीन मूर्तियां तथा मुद्रायें मिली है यहां पश्चिम की और गोरख नाथ के शिष्य गरोव नाथ का मन्दिर हैं. वामन पुराण के अनुसार विश्वामित्र को यही पर ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हुआ था गजनी तथा गौरी ने थानेसर कों लूटा, उनके परवर्ती मुस्लिम अधिकारी यहां आने वाले तीर्थ यात्रियों का चालान करने लगे अन्त में वीर हिन्दुओं के सहारे यहां पुनः तीर्थों का उद्धार होना आरम्भ हुआ यहां मधु स्रवा, धृत स्रवा, ययाति, वृहस्पति तथा पृथ्वाशरादि अनेक तीर्थ है।

पेहेवा

महा वेन के पुत्र महाराजा पृथ् के राजा नाम से ही, यह तीर्थ स्थान पृथुदक के नाम से विख्यात् हुआ पृथ पृथू का सरोवर इस का हो पेहेवा हो गया हैं हज़ारों यात्री प्रतिवर्ष पितृ पक्ष में यहां श्राद्ध आदि करने के लिये आते हैं उस समय यहां बड़ा मेला लगता है, यहां के प्रसिद्ध तथा प्राचीन मन्दिर एवं दर्शनीय स्थान निम्नलिखित हैं।

पृथ्वीश्वर महा देव

यहां प्राचीन मन्दिर है जिस का निर्माण सर्व प्रथम महाराजा पृथु ने किया था परन्तु मुसलमानी राज्य में यह स्थान भी विध्वंस कर दिया गया, मरहटों ने इस मन्दिर का पुनः निर्माण करवाया था तथा इसका जीर्णोद्धार महाराजा रणजीत सिंह जी ने करवाया था।

सरस्वती देवो

यह मरस्वती देवो का छोटा सा मन्दिर सरस्वती नदी के धार पर ही बना हुआ है। इस का निर्माण भो मरहटों ने करवाया था मन्दिर के द्वार पर चित्रकारी किया हुआ एक दरवाजा लगा हुआ है जो एक स्थान से खुदायी के समय निकला था।

स्वामी कार्तिक

पृथ्वीश्वर महादेव के मन्दिर के समीप है एक अत्यन्त प्राचीन मन्दिर स्वामी कार्तिक का है, श्रद्धालु यात्री यहां श्रद्धा से तेल एवं सिन्दूर चढ़ ते हैं।

चर्तुभुख महादेव

यह शिव मन्दिर बाबा श्रवण नाथ के डेरे में है प्राचीन तथा विशाल मन्दिर हैं शिव लिङ्ग असली कसोटी का बना हुआ है उस में चार मुख्य बने हैं तथा पास ही अष्ट धातु की बनी हुई हनुमान जी को विशाल मूर्ति है जा दर्शन करने योग्य है।

सरस्वती के तट् पर पवित्र घाट

पृथूदक इस स्थान पर राजा पृथू तप करके अपने परम तत्व में लीन हुये थे इस से यह स्थान पृथुदक कहलाया तथा शहर भी इसी नाम से विख्यात हुआ यहीं पर अतङ्ग मनु इत्यादि ने भी तप किया था :—

ब्रह्म योनि

यह तीर्थ स्थान पयूदास तीर्थ के साथ जुड़ा हुआ हैं कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने सर्व प्रथम सृष्टि की रचना इसी स्थान पर की थी, यहीं पर तपस्या करके विश्वामित्र ने यही

ब्रह्मणत्व पद प्राप्त किया था यह तीर्थ स्थान नदी के किनारे शहर से लगभग एक फर्लाङ्ग दूर है।

अवकीर्ण तीर्थ

मानव कल्याण के लिये यह तीर्थ ब्रह्मा जी ने बनाया था ऋषि वकदालभ्य ने यहां जप, तप तथा यज्ञ किये थे। यहां पप यज्ञ पवीत संस्कार करवाया जाता है। यात्री इस स्थान पर स्नान करके ब्रह्मा जी का पूजन करते हैं इस के पास ही पृथ्वीश्वर महादेव का मन्दिर है।

वृहस्पति तीर्थ

अवकीर्ण तीर्थ से ही जुड़ा हुआ यह तीर्थ स्थान है यहां पर देवताओं के गुरू वृहस्पति जो ने यलों का आयोजन किया था यहां स्नान करके वृहस्पति का पूजन किया जाता है।

ययाति तीर्थ

इस स्थान पर सरस्वती नदी के पावन तट पर महाराजा ययाति ने यज्ञ किये थे तथा राको की कामना के अनुसार ही सरस्वती दुग्ध घृत एवं मधु को बहाया था, इसी कारण ये फ़ाट भी मधु स्रवा तथा दुग्ध स्रवा से प्रसिद्ध है यहां यात्री स्नान करके पितरों के मोक्ष के निमित्त शास्त्रानुसार धार्मिक कार्य पूर्ण करते हैं इस स्थान पर सरस्वती के दोनों तटों पर पक्के घाट बने है चत्र शेक्ल १४ को इस स्थान पर मेला लगता है।

रम्भा तीर्थ

सरस्वती नदी के तट पर यह परशुराम जी के यज्ञ स्थान है लोग यहां परशुराम तथा उनके माता का पूजन करते है।

विश्वामित्र तीर्थ

यहां पर ऋषि विश्वामित्र जी का आश्रम था, यह उनके तप का स्थान है अब यहां एक ऊंचा टीला है तथा कच्चा घाट है।

वसिष्ठ प्राची

यहां महाऋषि वसिष्ठ का आश्रम तथा उन्होंने यहीं पर यज्ञों का आयोजन किया था। स्थान पर तीन मन्दिर भगवान शिव के हैं जो अब सुनसान से ही पड़े है तथा सरस्वती नदी के तट पर बने हुये घाट भी अच्छी दशा में नहीं है वहां पर दो शिव मन्दिरों के बीच में एक गुफा बनी हुई है जिसे वसिष्ठ गुफा कहते हैं तथा एक कूप हैं यात्री अपने स्वर्गवासी सम्बन्धियों के कल्याण के लिए धार्मिक कृत्य करते हैं, फल्गु तीर्थ या सोम तीर्थ यही पर प्राचीन पवित्र थलों का वन था जो कुरुक्षेत्र के सात पवित्र वनों में गिना जाता था, यहां एक ग्राम

भी है जो फरल के ग्राम से प्रसिद्ध है। प्राचीन समय में दृषद्वती नदी यहीं से होकर बहती थी पवित्र सरोवर अच्छी दशा में है यहां पर पितृ पक्ष तथा सोमवती अमावस्या के दिन बहुत बड़ा मेला लगता है कहा जाता है कि उस समय यहां श्राद्ध पिण्ड दान तथा दर्शन करने से गया के समान ही फल प्राप्त होता है। पांडवों ने यहीं आकर श्राद्ध किया था। इस के समीप निम्नलिखित तीर्थ है।

यहां यात्री दर्शन तथा धार्मिक कार्य करते हैं एवं पुण्य लाभ करते हैं।

१ पाणोश्वर २. सूर्य तीर्थ

3. शुक्र तीर्थ

पुराणों में इसका वर्णन कपिस्थल के नाम से किया जाता गया है। यह महावीर हनुमान जी की भूमि है महाराजा युधिष्ठर ने शान्ति स्थापना की इच्छा से दुर्योधन से जो पांच गांव मांगे थे, उनमें कपिस्थल भी था कुरुक्षेत्र रेलवे जकशन से २६ मील नरवाना ब्रांच लाइन का स्टेशन है एक पक्की सड़क भी यहां से करनाल जाती है मोटर बसें यहां जाती हैं।

ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थान

1. केदार तीर्थ

शहर के समीप यह एक विस्तृत सरोवर है इसके तट पर ७ शिवालय है चैत्र शुक्ला १४ को यहां मेला लगता है।

2. चण्डी स्थान

यहां पर चण्डी देवी का मन्दिर है।

3. सर्व देव तीर्थ या सकल सर यहां पर स्नान दान तथा ध्यान से सभी प्रसन्न होते हैं।

4. विष्णु तीर्थ

इसे इन्द्र तीर्थ भी कहते हैं यहां स्नान करके इन्द्र तथा विष्णु भगवान का पूजन किया जाता है।

5. रिंडो तीर्थ

यह शब्द नन्दी का अपभ्रंश है शिव के प्रधान गण नन्दी का निवास स्थान यहीं था।

6. नव ग्रह कुण्ड

यहां स्नान करके यात्री नव ग्रहों का पूजन करते हैं।

7. कुलोत्तारण तीर्थ

यह कैथल शहर से तीन मील उत्तर में है। यहां एक कुलोत्तारण ग्राम भी है। सरोवर के एक ओर पक्के घाट हैं तथा शिव मन्दिर है।

8. कैथल से तीन मील पूर्व में शेर गढ़ ग्राम है। यह तीर्थ स्थान है यहां पवित्र सरोवर तथा मन्दिर बना हुआ है कहा जाता है यहीं सरकंडों के वन में स्वामी कार्तिक का जन्म हुआ था यात्री यहां पर स्नान करके भगवान शिव ओर उनके पुत्र स्वामी कार्तिक का पूजन करते हैं।

9. धन जन्म

कैथल से दो मील पश्चिम में दूध खेड़ी ग्राम है। यह तीर्थ स्थान है, कहा जाता है कि ऋषि नारद को यहीं भगवान विष्णु और शिव जी के दर्शन हुये थे। इसी से उन्होंने अपना जन्म धन्य माना था। इसी से यह स्थान धन जन्म कहलाता है। यात्री यहा स्नान करके विष्णु तथा शिव का पूजन करते हैं।

10. मानस तीर्थ

कैथल से चार मील पश्चिम में मानस ग्राम है। यात्री यहां स्नान करते हैं एव दान करके पुण्य लाभ करते है।

11. आयगा

कैथल से दो मील पश्चिम की ओर गाघड़ी ग्राम में यह पवित्र सरोवर कुरुक्षेत्र की सात पवित्र नदियों में गिनी जाने वाली आयगा नदी यहीं से होकर बहती थी। श्रावण कृष्ण १४ को यहां बड़ा मेला लगता है, उस दिन स्नान दान से मोक्ष प्राप्त है।

12. सप्त ऋषि कुण्ड और ब्रह्म सवर

यह कैथल से 1½ मील दक्षिण पश्चिम में शिल खेड़ी ग्राम में है यहां ब्रह्मा जी तथा सप्त ऋषियों ने यज्ञ किये थे यात्री यहां स्नान करके ब्रह्मा जी तथा सप्त ऋषियों का पूजन करते हैं।

13. वासुकि यज्ञ

कैथल आठ मील पश्चिम में नरवाना ब्रांच लाईन पर संजूमा एक स्टेशन है। इस स्टेशन के समीप बाहर ग्राम में वासुकि यक्ष का मन्दिर है। यहां कुरुक्षेत्र की पश्चिमी सीमा समाप्त होती है। यात्री यहां स्नान करके अपनी यात्रा निर्विघ्न पूर्णता के लिए वासुकि यज्ञ का पूजन करते हैं।

जींद के समीप वर्ती तीर्थ

निम्नलिखित तीर्थ स्थान पानीपत से जीन्द जाने वाली छोटी लाईन पर स्थिति हैं। रेलवे स्टेशनों पर उतर कर आसानी से देखे जा सकते हैं।

रुपवती तीर्थ

यह स्थान आसन ग्राम में हैं जो रेलवे स्टेशन भी है यह ऋषि च्यवन की तपो भूमि थी। अश्विनी कुमारों की कृपा से ऋषि ने यही नव यौवन प्राप्त किया था। अश्विनी कुमार का अपभ्रंश ही आसन है। यात्री स्नान करके तथा पूजा पाठ करते हैं तथा स्वास्थ्य और सुरूप का लाभ प्राप्त करते हैं।

अरतुन्क यक्ष

बहादुर पुर ग्राम के समीप ही सैनिक सीम ग्राम में यह मन्दिर है। यात्री यहां स्नान करके यक्ष का पूजन करते हैं। यहां पर कुरुक्षेत्र की सीमा समाप्त हो जाती है।

बराह तीर्थ

जींद स्टेशन पर उत्तर कर यात्री विरही कला ग्राम में जाते हैं जो जींद से थोड़ी दूर है, यहीं पर वराह तीर्थ है तथा इसके आसपास अन्य तीर्थ भी हैं:—भगवान विष्णु बराह का रूप शकर यहीं प्रकट हुए थे तथा पृथ्वी का उद्धार किया था यात्री स्नान करके विष्णु का पूजन करते हैं।

पिण्ड तारक तीर्थ

यह तीर्थ स्थान पिंडार में हैं जो रेलवे स्टेशन भी हैं यहां बहुत बड़ा पवित्र सरोवर है, जिसके पक्के घाट और मन्दिर हैं तथा एक धर्मशाला तीर्थ के समीप ही है सोमवती अमावस्या को यहां बड़ा भारी मेला लगता है यात्री इसमें स्नान करके पितृ तर्पण करते हैं।

वराह वल :—

यह तीर्थ स्थान एक जंगल है जो पिंडार के नाम से प्रसिद्ध हैं।

यहां बहुत से तीर्थ स्थान है तथा एक मन्दिर अग्नी देवी का है। श्रावण के महीने में यात्री इसकी परिक्रमा करते हैं तथा भगवान नृसिंह का पूजन करते हैं।

पुष्कर तीर्थ

पिंडार से तीन मील पर है :—

यह परशु राम जी के पिता जमदग्नि ऋषि की तपो भूमि हैं यहां पर एक बड़ा सरोवर है। जिस में पक्के घाट एवं शिव का मन्दिर है।

राम श्रद

जींद रेलवे स्टेशन के समीप है। एक पवित्र एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है परशु राम जी ने यहां यज्ञ किये थे पक्के घाट, मन्दिर तथा धर्मशालायें इसके तट पर बनी हुई हैं:—इसके समीप अन्य तीर्थ स्थान हैं।

कपील यज्ञ

यह मन्दिर कुरुक्षेत्र की दक्षिण पश्चिम सीमा पर है यात्री यहां कपील यज्ञ का पूजन करते हैं।

सन्निहित

थानेसर के सन्निहित तीर्थ की भांति है इस तीथ का बड़ा भारी महात्म्य है। सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण पर यहां बड़ा भारी मेला लगता है। यात्री स्नान करके परशुराम और उनके माता पिता का पूजन करते हैं।

भूतेश्वर महादेव

यह मन्दिर भी जींद शहर में ही है महाराज रघुवीर सिंह ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था तथा पवित्र सरोवर के मध्य में भगवान शिव का मन्दिर है सरोवर के तट पर अन्य मन्दिर तथा धर्मशालाऐं भी हैं सूर्य कुण्ड पर जयन्तो देवी का मन्दिर है कहते हैं जयन्ती का अपभ्रंश जींद हो गया है, इसके समीप ही निम्नलिखित तीर्थ स्थान हैं।

(१) सोमनाथ (२) ज्वाला माला (३) सूर्य कुण्ड (४) शंकर तीर्थ (५) असिधारा (६) एक वंश तीर्थ उर्फ टूंढा।

वंश तीर्थ उर्फ टूंडा

सप दमन—यह तीर्थ सफेदों में है। जो रेलवे स्टेशन भी है कहा जाता है। महाराज जन्मेजय ने यहां सर्प दमन यज्ञ किया था यह तीर्थ स्थान सूर्य कुण्ड भी कहलाता है।

दूसरा खण्ड

यह खण्ड श्री लाला दयाली राम जी, जो यहां पटियाला की उर्दू लिपि में लिखी पुस्तक से जो १९२२.३० में छपी हुई है। कुरुक्षेत्र दर्पण गाईड से लिया गया है। यह पुस्तक उन की दी हुई है। मेरे पास अब तक स्मृति रूप में पड़ी हुई है। जो इस पुस्तक की शोभा बन गई है।

—सम्पादक

कुरुक्षेत्र की महिमा:— उपनिषदों पुराणों प्राचीन ग्रन्थों और धर्म शास्त्रों में जगह जगह वर्णन है।

यह तीर्थ सब से प्रसिद्ध प्राचीन और राज तीर्थ कहा गया है इस का जल थल और आकाश तक पवित्र मानी जाती है। इस की ४८ कोसो भूमि धर्म कर्म का प्रसिद्ध फल देने वाली बल्कि मुक्ति की दाता है। कोई ऋषि मुनि और अवतार ऐसा नहीं हुआ जिस ने यहां जप तप और यज्ञ करके इस की पवित्रता का सबूत न दिया हो। ऐतिहासिक दृष्टि से यह भूमि सृष्टि की उत्पति का केन्द्र है। दुनियां की दूसरी कोमो की दृष्टि में इस की बड़ाई महा भारत को जङ्ग से है। पर हिन्दुओं की निगाह में यहां भारत की बड़ाई इस वजह से है कि यह जङ्ग इस पवित्र भूमि में लड़ी गई।

सत युग में ब्रह्मसर रहा, त्रेता में जब क्षत्रियों के राज्य से परशुराम ने पांच तलाब भरे तब राम ऋद्ध नाम हुआ द्वापर में कुरु राजा' के मोक्ष प्राप्ति हेतु हल चलाने और शरीर काट कर बोने से कुरुक्षेत्र नाम हुआ और कलियुग में समन्त यानि पांच प्रसिद्ध तीर्थ (१) सन्निहित (२) स्थानेश्वर (३) रुद्रकूप (४) चतुर्मुख (५) कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ। यह चारों युगों का तीर्थ है। इस भूमि पर पाप नहीं करना चाहिये। राजा जनक ने ऋषियों की आज्ञा अनुसार सुनहरी हल बना कर चलाया था और पृथ्वी से सीता जी को प्राप्त किया था। भगवान कृष्ण चन्द्र का नाम इस भूमि के चप्पे चप्पे से जुड़ा हुआ है। यहां भारत की लड़ाई में तो वह इस भूमि में घूमते रहे। एक बार सूर्य ग्रहण के अवसर पर भो वह यादवों के साथ यहां पधार और वासुदेव जो ने बड़ा भारी यज्ञ किया था। गोकुल से राधिका जी और ग्वाल बाल इस अवसर पर आये थे। थानेश्वर ऐतिहासिक स्थान में शेख चीली का रोज एक मशहूर स्थान देखने याग्य है। जो बहुत उच्चा है। और जो दूर से दिखाई देता है। यह शाहजहां ने अपने पीर की स्मृति में बनाया था। इस समय में धार्मिक पुरुष इस स्थान को धर्म क्षेत्र समझ कर यहां पधार कर पुस्तकें लिखते रहे हैं। भाई गुलाब सिंह जी, निर्मला साधु ने यहां पर अध्यात्मक राम राज्य चन्द्र प्रबोध इत्यादि ग्रन्थ यहां पर रह कर लिखे है। भाई सन्तोष सिंह जो ने सूजें प्रकाश प्रसिद्ध ग्रन्थ भी इसी में लिखा।

श्री महाराजा रीवा के एक लाख रुपये के दान से और दुसरे दानी सज्जनों के दान से जोर्णोद्धार समिति ने कई घाटों और महदरियों की दरुस्ति करवाई है।

चक्र व्यूह विवरण-स्थान अमीन ग्राम जिला करनाल में चक्र व्यूह का नक्शा हैं, जिस को कांसी की थाली में लाल चन्दन से अनार की कलम से प्रसव आसानी से बाहर आ जाता है।

हमारे शहर के प आत्मा राम न्याय रत्न यह मन्त्र लिख कर दिया करते थे मन्त्र का जल अन्दर जाते ही बच्चा बाहर आ जाता है।

नकशे का चित्र मन्त्र सहित इस पुस्तक में दिया गया है, मन्त्रों का फल शास्त्र में लिखा हुआ विफल नहीं होता मन्त्र में बड़ी शक्ति है जिस देवता का मन्त्र हो उसमें उस देवता का वास होता है।

तीर्थ शब्द का अर्थ और परिभाषा शृ पल्वन तरणयो, धातु से पातृ श्रृदि वचि सिचिभ्य स्थक "इस उणादि सूत्र द्वारा (थक) प्रत्यय करने पर तीर्थते अनेन (इस से तर जाता है) इस अर्थ में तीर्थ, तीर्थः शब्द भी निष्पन्न होता है।

माता : पिता गुरु यज्ञ, पुगस्त्र, क्षेत्र, अवतार ऋषि, सेवित जल, साम दान आदि उपाय, योगध्यान, सत्पात्र, ब्राह्मण अग्नि, जङ्गम, मानसिक और भौतिक पवित्र पदार्थों को तीर्थ संज्ञा दी गई है।

साधु ब्राह्मणों को इस विश्व का जङ्गम तीर्थ कहा गया है। इन से सद्वाक्य रूप, निर्मल जल से मलीन मन शुद्ध हो जाता है।

ब्रह्मणाः जङ्गमं तीर्थ निर्मल सर्व कामिकम्।
येषां वाक्यो दकेनेव शुद्धयन्ति मलिना जनाः॥
मुद मङ्गल भय संत समाजू
जो जल जङ्गम तीरथ राजू
कर न सकेंगे शेष शारदा तक जिनका सम्यक् गुण गान
जिन के सम्मुख लज्जित होता परमेश्वर का दिव्य विधान
चरण धूलि का एक एक कण तीर्थ महान
लगा नहीं सकता कोई भी जिन को महिमा का अनुमान
पापी, पतित कामी जो करते सच्चा सनमान
सदा काल वशवर्ती जिनके, शरणागत-वत्सल भगवान
उन सन्तों की चरण धूलि का एक एक कण तीर्थ महान
साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थ भूताहि साधव; तीर्थो फलति कालेन सद्य साधु समागमः

सेवा तीर्थ

माता तीर्थ तीर्थ है रोगी, अभ्यागत है तीर्थ महान
इन सब की सच्ची सेवा से द्रवी भूत होते भगवान्
द्रवीभूत जब हो जाते हैं कमल नयन वे दया निधान
तो इच्छित पदार्थ निज जन को कर देते हैं तत्काल प्रदान।

माता तीर्थ पिता तीर्थ

नास्ति मातृ समं तीर्थ पुत्राणां च पितुः समम्।

जो पुत्र घर पर ही अपने माता पिता की सेवा करता है उसे घर पर ही भागीरथी स्नान का पुण्य मिल जाता है।

गुरू तीर्थ

सूर्य दिन के, चन्द्रमा रात्रि के तथा दीपक करके अन्धकार को हटा कर उस में उजाला करते हैं, परन्तु गुरू तो शिव्य के अज्ञान अन्धार को हटा कर उस में दिन रात और घर में उजाला करते हैं ।

शिव्याणां परमं पुण्यं धर्म रूपं सतातनन् ।
पर तोर्थ परमं ज्ञानं प्रत्यक्ष फल दायकम् ।।

भार्या तोर्थ

पुरुषों को सद्गति देने वाला कोई दूसरा तीर्थ नहीं है

तस्माद् भार्या बिना धर्मः पुरुषस्य न सिद्धयति ।
नास्ति भार्या सम तीर्थं पुसां सुगति दायकम् ।

पती तिर्थ

स्त्री के जिये पति ही परमेश्वर पति ही गुरु पति ही परम देवता है ।
सर्व तीर्थं भयो भर्ता सर्व पुण्यमयः पति
तथेव गंगा यमुना च वेणो गोदावरी सिन्धु-सरस्वती च ।
सर्वाणि तीर्थानि वसंति तत्र यत्राच्युतोदार कथा प्रसङ्ग ।।

जहां अच्युत भगवान की मनोहर कथा होती है वही गङ्गा इत्यादि सभी तीर्थ रहते है ।

कथा भागवत स्यापि नित्य भवति यद् गृहे।
तद गृहं तीर्थ रूप हि वसतां भयनाशनम् ।।

जिस घर में नित्य भागवत की कथा होती है वह घर तोर्थ रूप ही हो जाता हैं ।

परमात्मा श्री कृष्ण के द्वारा पूजित गोमाता तीर्थं गोमाता एक बहुत अदभुत तीर्थ स्थान है जिसमें ३३ करोड़ देवताओं का निवास है ओर घर बैठे एक साथ वन्दन, पूजन परिक्रमा और भोग लगाने का परम सौभाग्य प्राप्त हो जाता है ।

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णु मुखे रूद्रा प्रतिष्टिता सव मध्ये देवगणाः रोम कूपे महर्षयः ।
नाग पुंच्छे क्षुराग्रेषु ये याष्टे कुल पर्वताः । मूत्रे गङ्ग नद्यो नेत्रयोः शशी भास्करो।
यते यस्या स्तनो देवा सा धेनु वरदास्तु मे। वर्वितं धेनु महात्म्यं व्यासेन
श्रो मता स्वयम ।

पांच प्रकार के व्यक्तियों को तीर्थ का फल नहीं मिलता श्रद्धा रहित, पापी, नास्तिक, संशयात्मा, यथा कुतर्की, यह पांच प्रकार के लोग तीर्थ के फल से वंचित रह जाते है।

अश्रद्धधानः पापात्मा नास्तिको ऽच्छिन्न संशयः।
हेतु निष्ठश्च पञ्चैते न तीर्थं फल भागिनः॥

—वायु पुराण

नोट

इस प्रकरण के प्रथम लेख में शास्त्र प्रभावों द्वारा जो यह सिद्ध किया गया है कि घर में रहते हुए किस प्रकार तीर्थ न जाने का फल मिलता है। उसका यह अभिप्राय नहीं है कि तीर्थ पर जाना आवश्यक नहीं है अपितु मातृ पितृ गुरू सेवा इत्यादि का विवेचन किया है समझदार लोग पढ़कर तीर्थों पर जाना न छोड़ दें।

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्

श्रद्धावान् ही ज्ञान को प्राप्त करता है, ज्ञान से मुक्ति होती है।

जो श्रद्धा सम्बल रहित नहीं सन्तन कर साथ।
उनको तीर्थ स्नान का भले नहीं आवे हाथ॥

गुरू भक्ति, मातृ भक्ति पत्नि भक्ति आदि भाव पर निर्भर है भाव के बिना कोई भी क्रिया फल दायक नहीं है।

भावे ही विद्यते देवः न काष्ठे न मृण्मये

जाकी रही भावना जैसो।
हरि मूरत देखी तिनि तैसी॥

न काष्ठे विद्यते देवो न पाषाणे न मृण्मये।
भावे हो विद्यते देवः तस्माद् भावो ही कारणम्

तीर्थे तीर्थे निर्मल ब्रह्म वृन्दं वृन्दे तत्व चिन्तानुवादः।
वादे वादे जायते तस्य बोधः बोधस्ते भासते चन्द्र चूडः॥

तीर्थ में क्यों जाना चाहिये (मनुष्य जन्म का परम उद्देश्य और एक मात्र लाभ है भगवद् प्राप्ति। मनुष्य में चाहे झुरियां पड़ गई हो अथवा वह अभी जवान हो, आई हुई मृत्यु को टाल नहीं सकता यों समझ कर भगवान् की शरण जाना चाहिये तथा भगवान् के कीर्तन, श्रवण, वन्दन और पूजन में मन लगाना चाहिये ये सारा संसार नाशवान् है तथा दुख देने वाला है परन्तु भगवान जरा मृत्यु से परे भक्ति देवी के प्राण वल्लभ तथा अच्युत हैं यह विचार कर भगवान का भजन करना चाहिये उन भगवान का ज्ञान होता है, पाप रहित साधु से उन साधुओं के सङ्ग से जिन की कृपा से मनुष्य दुःख से छुट जाता है साधु वे नहीं जो केवल

नाम धारी हों वस्तुतः साधु वे हैं जिन की लोक परलोक के विषय में आसक्ति नहीं रह गई है जो काम लोभ से रहित हैं ऐसे साधु भगवान् के भजन में लगे हुए मिलते हैं तीर्थों में उनका दर्शन है मनुष्यों की पाप राशि जला डालने के लिए अग्नि का काम करता है, इस लिये पवित्र जल वाले तीर्थों में जो सदा साधु महात्माओं के सुशोभित रहते हैं।

तीर्थ यात्रा का निश्चय करके) सत से पहले स्त्री कुटुम्ब, घर, पदार्थ आदि को असत्य जान कर उनमें आसक्ति न रहने दे और मन से भगवान् का स्मरण करे घर परिवार धनादि में मन लगा रहेगा तो उन्हीं का स्मरण होगा तीर्थ यात्रा का उद्देश्य ही याद नहीं रहेगा तदनन्तर राम राम की रट लगाते हुये तीर्थ यात्रा आरम्भ करें एक कोस जाने पर पवित्र नदी सरोवर में स्नान करके क्षौर करवाले :—

यात्रा की विधि जानने वालों के लिये यह आवश्यक है। तीर्थों के और जाने वालों के पाप उनके बालों पर आकर ठहर जाते हैं अतः उनका मुण्डन करा देना चाहिए उसके बाद बिना गांठ का दण्ड चिकनी बांस की मजबूत सोटी कमण्डलु और आसन लेकर तीर्थ के उपयोगी मेरा धारणा करे तथा धन पूजा आदि के लोभ का त्याग कर दे—इस विधि से यात्रा करने वालों को विशेष रूप से फल की प्राप्ति होती है इसलिये पूरा प्रयत्न करके तीर्थ यांत्रा की विधि का पालन करे जिसके दोनों हाथ दोनों पैर मन बंश में है, अर्थात् भगवान की सेवा एवं स्मरण में होते है। और जिसमें अध्यात्म विद्या तपस्या तथा कीर्ति होती है वह तीर्थ के फल को प्राप्त करता हैं।

हरे कृष्णा हरे कृष्ण वत्सल गोपते।
शरन्यं भगवान्, विष्णों मां याहि वहु संस्सृते।

जीभ से इस मन्त्र का उच्चारण तथा मन से भगवान् का स्मरण करते हुये पैदल ही तीर्थ यात्रा करनी चाहिये वह महान् अम्भुदय की प्राप्ति कराने वाली होती है।

GENERAL REPORT (13-8-84 to 31-12-87)

The present Executive start functioning w e f. 13.8.84 after General elections of the Society. During this period the following donors have constructed rooms and verandahs on the pursuation of the Executive Committee which costs about Rs. 6 lacs.

1. Sh. Madan Lal, Prop. M/s Dwarka Cheap Store, Patiala.
2. Sh. Megh Raj, c/o M/s Aggarwal Tea Traders, Patiala.
3. Sh. Ram Sarup of Jourian Bhatian, Patiala.
4. Miss Phulan Devi resident of Ambala City.
5. Smt. Bachni Devi w/o Late Sh. Jamna Dass Saraf, Patiala.
6. Smt. Shakuntla Devi w/o Late Sh. Banarsi Dass, Patiala.
7. Sh. Kharaiti Lal Aggarwal, Jawahar Nagar, Moga.
8. Sh. Mohinderpal resident of Amargarh
9 Sh. Des Raj Gupta, r/o Bishan Nagar, Patiala.
10. Sh. Jai Parkash, Bartan Wale, Patiala.
11. Smt. Purni Devi w/o Sh. Nand Lal resident of Chamkaur Sahib.
12. Smt Krishna Devi w/o Ram Gopal, resident of Patiala.
13. Sh. Chaman Lal Ghai resident of Patiala.
14. Sh. Raghbir Chand resident of Patiala.
15 Dr. Hom Chand resident of Chandigarh.
16. Sh. Raunak Ram, resident of Patiala.
17. Smt. Kamlawati w/o Seth Charan Dass of Amargarh.
18. Sh. Nathu Ram Aggarwal, r/o Mohali.

Besides above the society got erected 4 bath rooms 8 latrins and one Tubewell for the convenience of the Yatries for which there was great demand. It costed approximately Rs. 75,000/-. The society has also constructed verandahs before the rooms which have no verandahs.

For the facility of pilgrims who often stay in Gita Bhawan, Kurukshetra, the society arranged and provide the following articles.

1. Flooring Darries
2 Blankets
3. Chaddars
4. Rajai/Gadda
5. Steel Beds
6. Utencils
7. Ceiling Fans

With the cost of Rs. 40,000/- Sat Sang Bhawan with stage of size 12'×10' and chips flooring of size 28'×130' has been constructed for Dharam Parchar, Kirtan etc.

During the tenure of the outgoing Executive, the society organised various functions on the occassions of Somavati Amavas, Solar Eclips, Phalgu Mela, Pehowa Mela etc. On these occassions the society provided langar, free medical aid and camps

for stay to the pilgrims. Satsang and Dharam Parchar was also solemnized. On these occassions the high dignitries/Maha Mandleshwars visited Gita Bhawan on the invitation of the society and preached the General Public.

Tne Society persuaded the Central Government for opening an Akashwani Kendra for Gita Parchar at Kurukshetra' which was sanctioned by the Hon'ble Information and Broadcasting Minjster Sh. V.N. Gadgil. The survey of the site has already been carried out by the authorities of the Akashwani Department and will start functioning very shortly.

The Society has initiated new schemes in connection with the running of daily langar being given to needy persons near about 150 persons daily.

The society also make permanent members of Langar with Rs. 501/-, ordinary members of Rs. 11/- P.M. so that langar may continue for ever.

Under the supervision of Gita Bhawan Trust an institution named Andh Biklang Ashram has been opened on 13 3.1988 in memory of Smt Indra wati w/o Bhagat Tulsi Ram Ji of Patiala and the society has committed to provide 2 times meals and tea to the members of the Ashram which is being provided since then.

The society has persuaded Seth Puran Chand Arora of Delhi for the erection/ installation of Murti of Mahabir Ji in the Gita Bhawan premises who has agreed for the same. Murti of Shri Hanuman Ji had been purchased from Jaipur costing Rs 22501/- and is being installed shortly.

Sh. Brij Lal Mittal a retired Bank Officer, State Bank of Patiala has voluntarily offered his honorary services to the society for supervising the langar work and he is performing his duties with great devotion sincerly and honestly.

Pt. Kanshi Ram also organized very well all the functions of Gita Bhawan Mandir and pe1suading the visiting pilgrims for denotation for welfare of the society. His work is very much remarkable.

Bhagat Tulsi Ram Ji and Sh. Megh Raj Aggarwal have done remarkable work for the welfare and betterment of the society from the core of their heart by devoting their precious time and energy.

RAJ KUMAR GUPTA
President

JAI PAUL) Vice Presidents
DEV RAJ)

BHAGAT TULSI RAM
Org. Secretary

DEVI DASS SHARMA
General Secretary

JIWAN LAL JAIN
Joint Secretary

CHARAN DASS
Treasurer

OLD LIST OF LIFE MEMBERS

1. Sh. Baba Ji, Peshawar Soap Factory. Adalat Bazar, Patiala.
2. Sh. Sat Pal Gupta, H.No. 2307, Sath Ghara, Patiala.
3. Sh. Tarloki Nath Chiranjiv Lal, Steel Rolling Mills, Factory Area, Patiala.
4. Sh. Mohan Lal Advocate, Misri Bazar, Patiala.
5. Seth Charanji Lal M/s Navyug Bastralya, Adalat Bazar, Patiala.
6. Sh. Prit Pal c/o Bhagwan Singh, Timber Merchant, Moh. Shamsher Singh, Patiala
7. Sh. Puran Chand c/o Raj Trading Company, Patiala.
8. Sh. Mohan Lal Zakhmi, Mohalla Lal Bagh, Patiala.
9. Sh. Mukesh Kumar s/o Late Sh. Shambu Pershad, Mohalla Jand Gali, Patiala.
10. Sh. Umesh Kumar Atma Ram Kumar Sabha Higher Secondary School, Patiala.
11. Sh. Bal Krishan Ji s/o Late Sh. Roshan Lal Gaje Wasia, Anaj Mandi, Sirhind Road, Patiala.
12. Sh. Brij Lal, c/o Nett Ram, Factory Area, Patiala.
13. Sh. Suraj Bhan c/o Baweja Cloth House, Bajaja Bazar, Patiala.
14. Sh. Ram Sarup Advocate, Katra Sahib Singh, Patiala.
15 Sh. Devi Dass Johar Gali No 5, H.No. 555, Gurbax Colony, Patiala.
16. Sh. Prem Nath Jain Advocate Mohalla Shamsher Singh, Patiala.
17. Sh. Ram Parkash c/o M/s Jamna Dass Ram Parkash, Jeweller, Adalat Bazar, Patiala.
18. Chowdhry Banarsi Dass. Sat Paul Commission Agent, Anaj Mandi, Sanauri Gate, Patiala.
19. Sh. Om Parkash Kapoor s/o Bir Dasondhi Ram Markal Colony, Sanauri Gate, Patiala.
20. Sh. Madan Lal Commission Agent c/o Atma Ram Madan Lal New Mandi, Sirhind Road, Patiala.
21. Sh. Banarsi Dass Singla, Gher Sodhian, Patiala.
22. Sh. Jiwan Lal Jain, H.No. 2335/1, Sath-Ghara Street, Patiala.
23. Sh. Panna Lal Ji Longowalia Iron Merchants, Kotwali Chowk, Sangrur.
24. Sh. Madan Lal c/o Anu Mal Shop No. 27, New Grain Market, Sirhind Road, Patiala.
25. Sh Jia Lal Ji c/o Tilak Ram Puran Chand Nabha Gate, Anaj Mandi, Patiala.
26. Sh. Niranjan Lal Mahajan, Sath-Ghara Street, Patiala.
27. Sh Suraj Bhan s/o Sh. Ram Gopal Near Rajan Hospital, Patiala.
28. Sh. Devi Dass Sharma M.A., LL.B. H.No. 4997/1, Mohalla Arorian, Patiala.
29. Sh. Ram Pershad Seth M/s Seth & Co., Shere Punjab Market, Patiala.

30. Sh. Babu Ram Charan Dass, Cloth Merchant Near Anardana Chowk, Adalat Bazar, Patiala.
31. Sh. Dev Raj Bansal, L.I.C., Near Sirhindi Bazar, (Jand Gali) Patiala.
32. Sh. Raghbir Ji Advocate Distt. Courts, Ambala.
33. Sh. Laja Ram c/o Rajzada Laja Ram, Sarafa Bazar, Ambala City.
34. Sh. Chaman Lal Gupta c/o Gupta Embrodary Bhawan Near Oil Mills Gate, Modi Nagar.
35. Sh. Ram Sarup Jain, Advocate, 844, Urban Estate Near P.R. Jawada Wala, Ambala City.
36. Sh. Devki Nandan Gupta, Bank Manager, Near Dukh-Bhanjan Mahadev, Kurukshetra
37. Doctor Krishan c/o M/s Amar Krishan Old Sabzi Mandi, Patiala.
38. Sh. Pyare Lal Ji c/o Barkat Ram Pyare Lal, Dharampura Bazar, Property Dealer, Patiala.
39 Sh. Lal Chand c/o Sh. Walaiti Ram Bachan Lal Khalwale, Sanauri Gate, Patiala.
40. Sh. Raj Kumar Gupta c/o M/s Relu Ram Satish Kumar S.C.F. No. 3 Model Town, Market, Patiala.
41. Bhagat Tulsi Ram c/o Tulsi Ram Ved Parkash, Qilla Chowk, Patiala.
42. Sh. Amar Singh Singla Advocate Coal Merchant, Moh. Shamsher Singh, Patiala.
43. Sh. Tara Chand c/o Ranaq Ram Tara Chand Ghee Wale, Gur Mandi, Patiala.
44. Sh. Ganesh Dass Tandan, Padel Road Hatta Mohalla Naw Rang Building, Bombay-26
45. Sh. Uttam Chand Gita High School, Kurukshetra
46. Sh. Charan Dass Iron Merchant, Devi Dayala Chowk, Nabha
47. Sh Amarjit Chopra Retired Session Judge, 903 Tagore Nagar Near New Dayanand Hospital, Ludhiana.
48. Sh. Gurdial Singh Kaushal, Sharda Vdhyan Bhawan Gita High School,Kurukshetra
49. Sh. Ishwar Chand Contractor The Kedar Bala Chowk, Kurukshetra.
50. Sh. Ram Gopal Bansal Commission Agent c/o Bansal Steel Rolling Mills, Main Bazar, Mandi Gobindgarh.
51. Sh. Tara Chand Jain Commission Agent Cloth Merchant, Sunam.

52. Sh. Rameshwar Dass c/o Yog Dhan Rameshwar Dass Near Gol Chakar, Mandi Gobindgarh.
53. M/s Chuhar Mal Ved Parkash, Cloth Merchants, Main Bazar, Dhuri.
54. Sh. Mansa Ram Chopra Cloth Merchants, Bara Bazar, Kurukshetra.
55. Sh. Moti Ram Pardhan Green Market C/A Ghagga Mandi Near Patran.
56. Sh. Bant Lal Rice Mill C/A Main Bazar, Dhuri.
57. Sh. Prem Chand Jain University, Kurukshetra.
58. Sh. Inderjit Chopra Murari Engg. Works, Ludhiana.
59. Sh. Narata Ram Tractor Company Near Railway Station, Sunam.
60. Sh. Inderjit Advocate Secretary Sanatam Dharam Sabha, Bhatinda.
61. Sh. Lala Bishnu Pershad DCM Cloth Merchant Main Bazar, Thaneshwar Nagar, Kurukshetra.
62. Sh. Murari Lal c/o Murari Lal Raj Kumar, Document Writer, Mohalla Panj Hazari, Sunam
63 Sh Narata Ram Ji C/A Main Bazar, Mandi Gobindgarh.
64. Sh. O.P. Gupta Advocate A.D.J. Pilli Road, Kurukshetra
65. Sh. Hari Ram Savar Gali Dewan Wali, Nabha.
66. Sh. Himat Singh Sinha, University, Kurukshetra
67. Sh. Labhu Ram Raj Kumar, Commission Agent, Sunam
68. Doctor Balraj c/o Gujar Mall Road Hospital, Lndhiana
69 Sh Sarup Chand Ji c/o M/s Ruga Mal Sarup Chand C/A Bhawanigarh.
70. Sh. Roshan Lal Rasgula Sweet Merchants, Amloh Road, Mandi Gobindgarh
71. Sh. Shiv Kumar Qilla Chowk, Patiala.
72 Doctor Wazir Chand Grover Anardana Chowk, Patiala
73. Sh. Nirotam Dass & Co. Wholesale Cloth Merchants, Bhatinda
74. Sh. Banu Ram Jain, Factory Area Godrej Almirahs, Patiala
75 Sh. Charan Dass s/o Sh. Mohan Lal H.No. 848/2, Arna Barna Chowk, Patiala
76. Sh. Prem Kumar Haryana Milk Diary, Pehwa.
77 Sh Ved Parkash c/o Hira Lal & Sons C/A, Dhuri

78. Sh. Banarsi Dass c/o Ram Ji Dass Banarsi Dass Steel Rolling Mills, Amloh Road, Mandi Gobindgarh.
79. B. Dalip Chand Advocate Kothi No. 160, Sector 9-B, Chandigarh
80. Sh. Ram Pal s/o Late Sh. Gauri Shanker Kamboj, Jourian Bhatian, Patiala.
81. Swami Raj Giri Ji Saraswati Giri Mandir Mohalla Lal Bagh, Patiala.
82. Mehar Chand Bajaj Pardhan Shere Punjab Market, Patiala.
83. Punjab Rattan Advocate Katra Sahib Singh, Patiala
84. Om Parkash Aggarwal, Ibrahim Mandi, Soap Factory, Karnal
85. Baldev Raj Gupta H.No. 97, Mehar Singh Coiony, Tipri, Patiala
86. Sh. Rajinder Kumar Gupta Accountant, 11, Harinder Nagar, Patiala
87. Sh. Harinder Kumar Gupta c/o Aggarwal Tea Trader Arna Barna Chowk, Patiala
88. Lala Bachan Lal c/o Lala Walati Ram Bachan Lal Khal Wale Sanouri Gate, Patiala
89. Mahant Murari Lal Gopal Mandir Patiala Gate Purana Bus Stand, Nabha
90. Radha Kishan Khazanchi Old Lal Bagh Near Rama Bai Mandir, Patiala
91. Sh. Rattan Lal Gupta (Safaidi Wale) Sanour Road, Gupta Bhawan, Patiala
92. Sh. Vinod Kumar Goyal c/o M/s Pyare Lal Jagdish Kumar, Anaj Mandi, Nabha Gate, Patiala
93. Lala Madan Lal c/o M/s Sunder Lal Mohinder Pal Saraf Sadar Bazar, Bhatinda
94. Sh. Janeshar Dass Jain Railway Road, Malerkotla
95. Sh. Jiwan Lal Bansal c/o M/s Paras Ram Madan Lal, Commission Agents, Main Bazar, Samana Mandi-147101
96. Sh. Ram Dhan Singla c/o M/s Ram Dhan Sons, Karyana Merchant, Main Bazar, Samana Mandi.
97. Sh. Mohan Lal Mittal c/o M/s Mohan Lal Sudharshan Kumar Mittal, Bartan Wale, Main Bazar Samana Mandi.
98. Sh. Brij Lal Mittal, 1108-Milap Nagar, Hissar Road, Ambala City-135003.

——

Membership

The membership of the Society will be open to all Hindu over 21 years of age, who believe in Holy Tirathas of the Hindus and specially in the Holy Tiratha of Kurukshetra.

Member will be of the following kinds :—

(a) Ordinary Members (desired to pay Rs. 101/- only a year.)

(b) Life-members. They are expected to have their names associated with the Holy Land in some form or other Rs. 1101/- is the minimum donation.

(c) Specially-nominated members.

Ordinary Members :—All Hindus who fulfil the conditions mentioned in Rule (4) and who pay the amount of yearly subscription fixed from time to time in a general meeting of the Society and whose application for the membership has been duly approved by the Managing Committee of the Society.

Life-members :—All Hindus fulfilling the conditions specified in Rule (4) and subscribing Rs. 1101/-or more at one time to the Fund of the Society and whose names have been duly approved by the Managing Committee for such membership.

Specially nominated members :— All Hindus fulfilling the conditions specified in Rule (4), who may be nominated by the Society in any of their meetings convened under the rules, as members of the society either for life or for a certain specified period, by virtue of their eminent abilities religious status or services rendered by them to the cause of the society.

सदस्यता

२१ वर्ष से ऊपर की आयु के सभी हिन्दू, जो हिन्दुओं के पावन तीर्थों, विशेष रूप से कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थ में विश्वास तथा श्रद्धा रखते हों संस्था के सदस्य बन सकते हैं।

सदस्य निम्न प्रकार के होंगे :—

क) साधारण सदस्य (जो केवल १०१/- रु: प्रतिवर्ष देंगे,)

ख) आजोवन सदस्यता। इन सदस्यों को किसी न किसी रूप में अपना नाम इस पावन धरती के साथ सम्बद्ध रखना होगा। कम से कम दान ११०१ रुपये है।

ग) विशेषत. नामित सदस्य।

साधारण सदस्य :— सभी हिन्दू, जो नियम ४ में लिखी शर्तो को पूरा करते हों और जो सस्था की साधारण बठक में समय समय पर निर्धारित वार्षिक चन्दा देते हों और जिनका सदस्यता के लिए आवेदन पत्र सस्था का प्रबन्ध समिति द्वारा विधिवत् अनुमोदित कर दिया गया हो-संस्था के साधारण सदस्य होंगे।

आजीवन सदस्य :- सभी हिन्दू, जो नियम ४ की शर्तों को पूरा करते हों और जिन्होंने संस्था की निधि में एक ही समय ११०१ या अधिक रुपये दिए हों और ऐसी सदस्यता के लिए जिनका नाम प्रबन्ध समिति द्वारा विधवत् अनुमोदित कर दिया गया हो—संस्था के आजीवन सदस्य होंगे।

विशेषत : नामित सदस्य :—सभी हिन्दू, जो नियम ४ की शर्तों को पूरा करते हों और जिन्हें उनकी प्रबल योग्यता, धार्मिक व्यक्तित्व या संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति में उन द्वारा की गई सेवाओं के कारण प्रबन्ध समिति या संस्था द्वारा नियमों के अन्तर्गत बुलाई गई अपनी किसी भी बैठक में आजीवन या किसी भी निश्चित अवधि के लिए संस्था के सदस्य के रूप में नामित किया गया हो-संस्था के विशेषत: नामित सदस्य होंगे।

—०—

कुछ मुख्य दर्शनीय तीर्थ तथा सरोवर

१. काली कम्वली वाले
२. श्री गोड़िया मठ
३. गीता भवन
४ डेरा श्रवण नाथ
५. बिरला मन्दिर
६. वामन भगवान मन्दिर
७. थानेश्वर महादेव
८. लक्ष्मी नारायण मन्दिर
९. गीता रंगम
१०. कृष्ण धाम
११. ज्योति सर
१२. जय राम पीठ
१३. शिवेश्वर महादेव
१४. भद्र काली
१५. सनहित सरोवर
१६ ब्रह्म सरोवर
१७. बाण गंगा
१८. नाभ कमल
१९. चन्द्र कूप

नोट :—

१ यह प्राचीन मन्दिर श्री भद्र काली जहां श्री कृष्ण भगवान का मुण्डन सस्कार हुआ।

२. चन्द्र कूप कहते हैं इस का पानी सूर्य ग्रहण के मौके पर सफेद दूध सा हो जाता है। मुगलिया राज्य में इस जगह एक मुगल गढ़ी बनाई गई थी जिसके निशान अब तक दीखते हैं उस वक्त एक रुपया गीता हिन्दुओं से टैक्स वसूल किया जाता था।

४८ कोस भूमि का नकशा

कुरुक्षेत्र की 48 कोस भूमि, 360 तीर्थों का मान चित्र (नक्शा) गीता भवन में है। आप देख सकते है।

REGARDING BUILDING

LIST OF DONORS

Room	Name of Donor	
1.	... ...	SOCIETY
2.	... ...	SOCIETY
3.	... ...	SOCIETY
4.	... ...	SOCIETY
5.	... ...	SOCIETY
6.	... ...	SOCIETY
7.	... ...	SOCIETY
8.	Sh. Tirlok Chand Rai c/o Mukesh Rice Mill, Samana	
9.	... ...	SOCIETY
10.	... ...	SOCIETY
11.	... ...	SOCIETY
12.	... ...	SOCIETY
13.	... ...	SOCIETY
14.	... ...	SOCIETY
15	M/s Sondhi Ram Kulwant Rai, Patiala	
16.	Seth Arjan Dass Goyal, Patiala.	
17.	Dr. Kishori Lal Grover, Patiala.	
18.	Shed Cheeka Mandi	
19.	... ...	SOCIETY
20.	... ...	SOCIETY
21.	... ...	SOCIETY
22.	Sh. Gulhare Mahajan, Ambala	
22.	M/s Sobha Ram Suzan Chand, Yamuna Nagar	
24.	Smt. Raj Rani Pathak, Patiala.	
25.	Through Gora Lal Principal, Patiala.	
26.	Swami Ramanand Sarupa Nand, Sohana	
27.	Through Ladies Jointly, Mohalla Des Raj, Patiala	
28.	Smt. Lajwanti Dhak Bazar, Patiala	

Late Maharaja Sh. Benkat Raman Bahadur of Rewa State (M.P.)

Through Lala Diali Ram B.A. Retired D.P.I. (Patiala State) and Honorary General Secretary Shri Kurukshetra Restoration Society.

Through Sh. Tulsi Ram Gotewale Patiala

29. Smt. Kamla Vati M/o Sh. Ravinder Kumar & Late Sh. Mohan Lal F/o Sh. Charan Dass Thekadar (Amargarh Wale) Arna Barna, Patiala (Kitchen Bath attached)
30. Smt. Parsini Devi w/o Kapoor Chand Rice Mill, Patiala.
31. Sh. Birij Lal Karyana Merchants, Patiala.
32. Smt. Gomti Devi w/o Seth Panna Lal, Patiala.
33. Seth Amar Nath Iron Merchants, Gur Mandi, Patiala.
34. Smt Kanta Devi Sath Ghara, Patiala.
35. Smt. Indra Rani w/o Sh Jiwan Lal Jain, Sath Ghara, Patiala.
36. Sh. Chaman Lal Kanugo, Patiala.
37. Late Sh. Shiv Parshad, Misri Bazar, Patiala.
38 Smt. Shakuntla Devi w/o Seth Sham Lal Iron Merchants, Misri Bazar, Patiala. (Kitchen, Bath Room Varanda attached)
39. Smt. Naurati Devi w/o Seth Charan Dass Cinema Wale, Patiala (Kitchen, Bath Room, Varanda, Toilet attached)
40. Shiv Mandir, Smt. Dwarki Devi, Patiala.
41. Delhi Wale
42. Delhi Wale
43. Pandit Kirpa Ram Shastri, Jammu
44. Pujari Through Society
45. Radha Krishan Mandir, Maharaja Salana
46. Narshing Dass
47. Maharani Somarthi Devi, Balsan State, Simla
48. Through Bhagat Tulsi Ram Ji
49. Sh. Ghasitu Mal Jagadhri
50. Dewan Krishan Parkash, Lahore
51. Seth Multani Mal Modi, Patiala
52. Baba Hari Dass Guru Dass, Jalandhar
53. Sh. Madan Lal Munim Ram Gali, Patiala
54. M/s Tulsi Ram Raj Kumar, Patiala
55. Smt. Shakuntla Devi w/o Sham Lal, Iron Merchants, Patiala
56. Smt. Reshma Rani w/o Surinder Kumar, Panipat
57. Smt. Punni Devi Shakuntla Devi, Misri Bazar, Patiala
58. Smt. Devki Devi w/o Bhagwan Dass Gur Wale, Patiala
59. Smt. Shanti Devi w/o Parshotam Dass, Bhindian Street, Patiala
60. Smt. Dhani Devi w/o Kali Ram Bhindian Street, Patiala
61. Smt. Gini Devi w/o Seth Harmukh Rai Modi, Patiala. (Full Block)
62. Kumari Phulan Devl, Ambala City
63 Sh. Des Raj Gupta Truck Operator, Bishan Nagar, Patiala.

64. Sh. Hari Chand Jain, Patiala (Sh. Jai Parkash Bartan Wale Kesera Chowk, Patiala
65. Dr Hom Chand, Chandigarh
66. Bibi Purni w/o Late Sh. Nand Lal of Chamkaur Sahib Through Megh Nath Tea Merchants, Patiala.
67. HALL Sh. Megh Nath Harinder Kumar c/o Aggarwal Tea Traders Chowk Arna Barna, Patiala (Amar Garh Wale)
68. HALL Sh. Madan Lal Prop. M/s Dwarka Cheap Store, Patiala.
69 Sh. Jiwan Lal s/o Ram Sarup Jourian Bhatian, Patiala
70. Late Jagdish Chand s/o Late Jamna Dass Jewellers, Patiala
71. Smt. Shakuntla Devi w/o Banarasi Dass Sath Ghara, Patiala
72. Sh. Kharati Lal Aggarwal, Jawahar Nagar, Moga
73. Sh. Mohinder Pal Amargarh Through Sh. Megh Nath Aggarwal Patiala
74. Sh Dewan Chand Wholesale Tea Merchant, Nabha Gate, Patiala Through Megh Nath Aggarwal Tea Traders, Patiala
75. Sh. Naurata Ram Jhillwale, Patiala
76. Smt. Vidyawati w/o Shakti Parshad Gota Wale, Patiala.
77. Sh. Ram Gopal Mandi Gobindgarh
78. Seth Bihari Lal Iron Merchant Gur Mandi, Patiala.
79. Sh. Naurata Ram, Gobindgarh Mandi
80. Babu Dalip Chand Advocate Chandigarh
81. Aarthi Association Samana
82. Smt. Naurati Devi Patiala
83. Sh. Amar Nath, Ambala
84. Smt. Shimla Devi w/o Mam Raj, Simla
85. Sh. Ganga Ram Theri Wala, Patiala
86. Smt. Maya Wanti Chakla Bazar, Samana
87. Smt. Lajwanti w/o Hem Raj Advocate, Samana
88. Sh. Gian Chand Jand Gali, Patiala
89. Smt. Umari Devi w/o Kishan Chand, Patiala
90. Smt. Umari Devi Patiala
91. Sh. Mohan Lal s/o Sh. Ajudhya Pershad Jourian Bhatian, Patiala Through Bhagat Tulsi Ram Ji.
92. Smt. Devki Devi w/o Roshan Lal Bhindian Street, Patiala
93. HALL Smt. Vidyawati w/o L. Raunak Ram, Machine Wale, Patiala
94. Sh. Raghbir Chand Bagichi Het Ram, Patiala
95. Smt Krishna Devi w/o L. Ram Gopal, Patiala
96. Smt. Padma Devi w/o Nathu Ram Aggarwal, Mohali.

—o—

सूर्य और चन्द्र ग्रहण

सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के विषय में यो तो लोक सर्वविदित हैं। किन्तु सूर्य ग्रहण के समय इस धर्म क्षेत्र कुरुक्षत्र में स्नान करने का क्या महात्मय है, इस विषय में लोगों में कई धारणाए प्रचलित हैं इसी विषय में एक आख्यान है—इस धर्म क्षेत्र (कुरुक्षेत्र) में सरस्वती के किनारे पर महर्षियों ने दिन के समय आकाश में बादलों को कालिमायुक्त सूर्य को देख कर विचारा कि यह दिन में ही अन्धेरा कैसे होने लग गया इस प्रकार व सन्देह में पड़ गये।

इसी प्रकार ब्रह्मा जी की सृष्टि निश्तेग हो जाएगी। यह सोचकर महर्षिगण ब्रह्मा जी के ध्यान में बैठ गये। ब्रह्मा जी ने प्रत्यक्ष होकर महर्षियों को अभय दान देकर कहा है महर्षियो ! इस सोर मण्डल में सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनेश्चर तथा राहू एवं केतु ये नौ ग्रह हैं। इन नौ ग्रहों में राहु का स्वरूप अन्धकार है और केतु का आकर्षण। ये दोनों ही अदृश्य ग्रह हैं। शेष सभी ग्रहों का स्वरूप स्पष्ट हैं और अपनी स्थिति में विद्यमान हैं, राहु और केतु ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते रहतो है तीन सौ पैंसठ दिन में यह अपनी परिक्रमा पूरी करती है।

इस प्रकार महर्षियों को समझाते हुए ब्रह्मा जी कहते है कि हे महर्षियों। जब यह ग्रह(राहु) सूर्य के समीप में आता है तो सूर्य की किरणें पृथ्वी पर न पड़कर राहु ग्रह से टकराती हैं, इसलिए पृथ्वी के किसी भाग पर प्रकाश रहता है यानि किरण व्याप्त रहतो है और किसी पर अन्धकार।

इस अन्धकार में अनेक प्रकार के जीवाणु फैलने लग जाते है, जो कि अनेक प्रकार की बिमारीयां उत्पन्न करते हैं। इस समय सभी लोगों को खाने-पीने की वस्तुएं नहीं रखनी चाहिए या ऐसे पात्र में रखनो चाहिए जहां कि वे जीवाणु न घुस सके। ग्रहण के समय यज्ञ, दान-पुण्य इत्यादि करने चाहिए, क्योंकि इस समय में यज्ञ आदि कर्म सैंकड़ों फल देने वाले होते है। इस समय पर यज्ञ का बहुत महत्व हैं। "क्योंकि यज्ञ के कारण पवित्र धुआं निकल कर आकाश में व्याप्त होता है, जिससे बीमारियों के कीटाणु या तो नष्ट हो जाते हैं अथवा भाग जाते हैं। यह एक वास्तविक सत्य है। यह लेखक की अपनी अनुभूति है"।

ग्रहण के अन्तिम में यानि कोक्षकाल में पवित्र सरोवरों में स्नान करना चाहिए पवित्रता के लिए यह कुरुक्षेत्र भूमि अत्यन्त पवित्रकारणी है।

महाभारत, भागवत आदि ग्रन्थों में भगवान् श्री कृष्ण का सूर्य ग्रहण के समय कुरुक्षेत्र स्नान करने का वर्णन मिलता है इसका तात्पर्य यह है कि यह कुरुक्षेत्र प्राचीनकाल से ही पवित्र तीर्थ माना गया है।

NEXT SOLAR ECLIPSE ON 24th of OCTOBER 1995 (24-X-1995)

अगला सूर्य ग्रहण 24–10–1995 को आयेगा।

बाबत अनाज

कनक और चावल प्रतिवर्ष, व्यापारियों से, आढ़तीयों से और शैलरों से तथा दानीयों से निम्नलिखित मंडीयों से आता है :—

1.	सामाना	SAMANA	6.	घग्गा	GHAGGA
2.	चीका	CHEEKA	7.	देवीगढ़	DEVIGARH
3.	भवानीगढ़	BHAWANIGARH	8.	भुनरहेड़ी	BHUNERHERI
4.	नाभा	NABHA	9.	पातड़ां	PATRAN
5.	सुनाम	SUNAM	10.	पटियाला	PATIALA

रायजादा सेठ केदार नाथ मोदी, चेयरमैन मोदी इण्डस्ट्रीज, मोदी नगर जो हर वर्ष लंगर के लिए, सूर्य ग्रहण और फल्गू के मेले पर भी दान देते रहते हैं।

गीता भवन धर्मशाला

गीता भवन ब्रह्म सरोवर के पावन तट पर अवस्थित है जिसमें १०० कमरे हैं। 1981 वर्ष से गीता भवन ट्रस्ट ने गीता भवन के कुछ भाग को धर्मशाला का रूप दे दिया है जहां यात्री विश्राम करते है।

सदावर्त्त (लंगर)

समिति की ओर से गीता भवन में दोपहर 11 बजे से 12 बजे तक सदावर्त्त चलता है। और कम से कम 150 आदमी प्रतिदिन भोजन करते है।

धर्म प्रचार

प्रत्येक सूर्य ग्रहण तथा सोमवती अमावस्या के अवसर पर समिति की ओर से सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है यात्रियों के लिये भण्डारा आवास प्रबन्ध तथा चिकित्सा व्यवस्था की जाती है, दिन तथा रात्रि के समय धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

भारत के पावन स्थानों में पावनतय कुरुक्षेत्र

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति

गीता भवन ट्रस्ट बिलडिंग, कुरुक्षेत्र ।

श्री कुरुक्षेत्र जीर्णोद्धार समिति का निर्माण स्वर्गीय श्री दयाली राम जी चौपड़ा ने 1918 में किया और 1921 में इस सोसाइटी को रजिस्टर्ड किया गया उन्होंने अपने तन मन धन से इसकी सेवा की और सारे भारत वर्ष से दान एकत्रित करके गीता भवन का निर्माण किया ।

सोसाइटी द्वारा बड़े परिश्रम से कुरुक्षेत्र के सारे तीर्थों का जीर्णोद्धार किया जैसे ब्रह्म सरोवर, सनेत, भद्रकाली मन्दिर, बाण गंगा आदि। ब्रह्म सरोवर में पहले जल की कोई सुविधा नहीं थी उस समय के कमिश्नर तथा सोसाइटी के सदस्यों की सहायता से चतुरंग नाले का निर्माण की योजना मन्जूर कराई गई और इसका सारा खर्च राय राजा बनारसी दास मैदा मिल अम्बाला वालों ने सोसाइटा की प्रेरणा से किया ।

लाला दयाली राम जी के स्वर्गवास के बाद उनके बड़े लड़के श्री केदार नाथ चौपड़ा इस सोसाइटी का कार्य भार संभाला और इसको बड़े सुचारू रुप से चलाया। कुछ स्वार्थी लोगों ने ब्रह्म सरोवर पर नाजायज कब्जा करने का प्रयास किया और ब्राह्मण पंचायत से इसे लिज पर ले लिया। श्री केदार नाथ जी लखनऊ में रहते थे। इस लिये वह इस पर ठीक ढग से नहीं चला सके। जब इस बात का पटियाला धर्म प्रेमियों को पता चला तो पटियाला नगर में कौलाहल मच गया। इस पर श्री भगत तुलसी राम जी ने सोसाइटी की पटियाला ब्रांच बनाकर तीर्थ सुधार ब्राह्मण पंचायत द्वारा हाई कोर्ट में नाजायज कब्जों के लिये केसा कर दिया। अतः उसमें हाई कोर्ट ने सोसाइटी के पक्ष में अपना निर्णय दिया। परन्तु इन लोगों ने नाजायज कब्जा नहीं छोड़ा। इसके जिये एक शिष्ट मडल केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री गोबिन्द वल्भ पंथ के पास दिल्ली गया ।

इस कार्य में स्वर्गीय जस्टिस श्री गिरधारी लाल चोपड़ा श्री कुलवन्त राय जी तथा पटियाला शाखा के अन्य सदस्यों ने महान सेवा की जो की सराहने योग्य है। इसमें श्री ओंकार नाथ तिवारी तथा पं० विशनु दत्त जी और तीर्थ सुधार ब्राह्मण पंचायत के सभी सदस्यों के आभारी है। जिन्होंने पटियाला ब्रांच के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर पूरा सहयोग दिया। इसके पश्चात् सोमवती अमावस के शुभ पर्व पर श्री गुलज़ारी लाल जी नन्दा भूतपूर्व गृह मन्त्री कुरुक्षेत्र ब्रह्म सरोवर पर स्नान हेतु पधारे तो उनको सोसाइटी के शिष्ट मंडल ने ब्रह्म सरोवर के तट के सुधार के लिये प्रार्थना की। सोसाइटी की ओर से भगत तुलसी राम जी की प्ररेणा से तट पर बहुत से घाटों का निर्माण किया गया। इस कार्य के लिये सेठ गुजर मल मोदी सेठ जोधा मल कुठारिया श्री गाडगिल गर्वनर पंजाब, पटियाला निवासी और भटिण्डा निवासियों ने

योगदान दिया। श्री नन्दा जी ने सोसाइटी की प्रार्थना पर कुरुक्षत्र विकास बोर्ड बनाकर ब्रह्म सरोवर के तट पर बहुत सुन्दर घाट तैयार किये है। और सरोवर में भाखड़ा नहर का जल डालने का प्रबन्ध किया है। इन घाटों पर यात्रीयों के शौच का, नहाने का, तथा ठहरने का बहुत अच्छा प्रबन्ध हैं। ये विकास बोर्ड को और से बहुत ही सराहने योग्य कार्य किया गया है।

लोगों की प्रेरणा से सोसाईटी ने विकास बोर्ड को प्रार्थना की कि इस सरोवर को सैर गाह न बनाया जाए तथा इस में नौका चलाना व मछली पकड़ना आदि बन्द होना चाहिये। इस सम्बन्ध में एक शिष्ट मंडल जिसमें श्री गिरधारी लाल जी चौपड़ा, बाबू दिलिप चन्द जो ऐडवोकेट तथा अन्य सदस्यों ने श्री नन्दा जी से भेंट की और उनको बताया कि यदि ऐसा होगा तो घाटों का सरकार द्वारा निर्माण नहीं होने देंगे। इसके लिये सोसाईटी ने एक धर्म सम्मेलन रखा जिसमें सनातन धर्म, पंजाब महावीर दल तथा अन्य सोसाईटीयों से लोगों ने भाग लिया। श्री नन्दा जी को भी इस सम्मेलन में आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन ने नन्दा जी को इस बारे में प्रार्थना पत्र दिया गया और उन्होंने विश्वास दिलाया कि सनातन धर्म की सम्सत परम्पराओं की पालना कि जाएगी। तथा जिन दानियों ने पहले घाटों का निर्माण कराया था उनका चित्र ब्रह्म सरोवर के आरम्भ में लगाया जायेगा। विकास बोर्ड ने दो करोड़ रुपये की लागत से ब्रह्म सरोवर के आधे भाग में बहुत सुन्दर घाट बना दिया है। बाकी आधे भाग के लिए स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री भारत सरकार को उनकी कुरुक्षेत्र यात्रा के समय प्रार्थना पत्र दिया जो कि उन्होंने स्वीकार कर लिया। और घाटों का विकास बोर्ड द्वारा निर्माण शुरू हो गया। सोसाइटी ने अब हरियाणा सरकार से प्रार्थना को है कि ब्रह्म सरोवर तथा सन्निहित तीर्थ में भाखड़ा नहर का जल डालने का ढंग से प्रबन्ध किया जाये कि एक तरफ से जल प्रवाह होकर फिर दूसरी तरफ से दोबारा नहर में ही चला जाये। हमारी इस मांग पर बिशेष ध्यान देकर स्वीकार करने का वचन दिया है।

इस समय श्री गीता भवन कुरुक्षेत्र में 120 कमरे है जिन में से 40 कमरों को धर्मशाला के रूप में प्रयोग किया जाता है। यहां पर यात्रीयों के लिये निःशुल्क ठहरने का प्रबन्ध है। सोसाईटी की ओर से सारे साल अन्न क्षेत्र की भी व्यवस्था है, जिस में साधु सन्त महात्मा और यात्री लोग भोजन पाते है। यह सब कार्य दानियों के सहयोग से चल रहा है।

अब गीता भवन का निर्माण कार्य चल रहा है। जिस में और कमरे निर्माणाधीन है। सब धर्म प्रेमियों से निवेदन है कि वह सोसाइटी के चल रहे निर्माण कार्यों और लंगर के लिये दिल खोल कर दान करे इस सम्बन्ध के लिये सोसाइटी के अधिकारियों से सम्पर्क करें।

विनीत :

प्रधान :	सैकटरी :	जनरल सैक्टरो :	धर्म प्रचार मंत्री :
राज कुमार गुप्ता	जीवन लाल जैन	श्री देवी दास शर्मा	भगत तुलसी राम जी
926/1 दीप नगर,	2335/1, सठ घरा,	अरोड़ा मुहल्ला	गोटे वाले
सिविल लाईन, लुधियाना	पटियाला	पटियाला	पटियाला फोन 72241

LIST OF PERMANENT MEMBERS OF RS. 501/- (FDR)

60. Sh. Chaman Lal Ghai s/o L. Ramji Dass, Ragho Majra Road, Patiala.
61. Sh. Brij Lal Mittal, Milap Nagar, Ambala City.
62. Sh. Banarsi Dass, Sanauri Mandi, Patiala.
63. Sh. Tulsi Ram Gote wale s/o Sh. Nathu Lal Ji of Patiala.
64. Smt. Sarvati Devi w/o Sh. Amar Nath of Patiala.
65. Sh. Amar Nath s/o L. Mukandi Lal of Patiala.
66. Smt. Bimla Devi w/o Sh. Amar Nath of Patiala.
67. Sh. Baldev Raj, Suraj Bhan & Kewal Krishan ss/o Banarsi Dass r/o Sath Ghara, Patiala.
68. Smt. Bhagwanti w/o Pt. Burhma Nand of Arorian Street, Patiala.
69. Smt. Manbhari c/o Sh. Radha Krishan Khajanchi Lal Bagh, Patiala.
70. Sh. Dev Raj Saraf of Patiala.
71. Smt. Shanti Devi w/o Gopi Ram r/o Delhi-6
72. Sh. Raj Kumar Gupta, Model Town, Patiala
73. Sh. Surinder Sharma s/o Pt. Burhma Nand, Arorian Street, Patiala.
74. to 75. Mohant Swami Krishna Nand Sarswati of Kurukshetra
76. Lajwanti w/o Sh. Salig Ram of Patran Mandi
77. Salig Ram s/o Daya Ram of Patran Mandi
78. Sh. Prem Chand s/o Mithan Lal, V. Baba Ladwa Teh Kaithal.
79. Sh. Chanan Ram s/o Simna Ram of Hardaya
80. Sh. Vijay Kumar c/o Kaur Sain Lachhman Dass, Cigrette Merchant, Patiala.
81. Smt. Raj Rani w/o Sh. Om Parkash of Patiala.
82. Sh. Mohan Lal Mittal of Samana.
83. Sh. Avinashi Lal Arora s/o Nand Lal of Kurukshetra
84. Smt. Dayawanti w/o Amar Nath Shastri, Des Raj Mohalla, Patiala.
85. Sh. Sat Paul Gupta c/o M/s Jagdambe Cement Agency, 22 No. Phatak, Patiala
86. Sh Devi Dass Johar s/o Sh. Nand Lal Johar of Patiala
87. Sh. Manohar Lal Garg s/o Sh Milki Ram, Patiala
88. Sh. Shiv Kumar s/o Inder Sain, Patiala
89. Sh. Ramesh Verma of Smt Naresh Verma, Vikesh Vihar, Ambala City.
90 Bir Bhan s/o Sh. Raja Ram of Basauli Teh. Rajpura
91. Phaggu Ram Mittal s/o Babu Ram of Ghanaur
92. Bhagwan Dass of Baroiche wali
93. Pujari Vaishno Devi, Mandir, Patiala
94. Parmatma Devi w/o Rameshwar Dass of Patiala

95. Vinod Puri, Om Parkash Kataria of Patiala
96. Smt. Lajwanti w/o Som Nath, Misri Bazar, Patiala.
97. Smt. Bhagwanti w/o Madho Ram of Ghanaur
98. Sh. Jagmohan Lal Johar Advocate, Sangrur
99. Smt. Shanti Devi c/o M/s D.V. Industries Corporation (Regd.) Opposite Power House G T. Road, Khanna
100. Smt. Sita Wati Bansal w/o Lala Sham Lal Bansal Through Sh. Surinder Kumar Bansal Advocate, Sangrur
101. Sh. Jagan Nath s/o Sh. Tilak Ram, Amargarh
102. Sh. Krishan Parkash Sharma Amargarh, Pt. Braham Surti Parkash Rathu and Mother Sita Devi Through son
103. Lala Mohan Lal s/o Sh. Dharma Mal Aggarwal Amargarh Through Kamla Vati Arna Barna Chowk, Patiala
104. Mother Sanaur wali and Mother Malerkotla Wali w/o Lala Mohan Lal s/o Sh. Dharma Mal Aggarwal Amargarh Through Ravinder Kumar s/o Seth Charan Dass Chowk Arna Barna, Patiala
105. Sh. Ishes Singh Kurkara and Smt. Satya Devi c/o M/s Mr. Brij Mohan Uppal Kothi No. 189, Phase-7, Mohali.
106. Smt. Raj Rani Sood w/o Late Sh. Om Parkash Sood 56/A, Saraba Nagar, LDH.
107. Lala Tej Ram s/o Sh. Jethu Ram Through Smt. Dwarki Devi 72, Markal Colony, Mirch Mandi, Patiala
108. Smt. Laxmi Devi w/o Sh. Nand Lal s/o Sh. Munshi Ram H.No 2948/3 Aggarwal Street, A Tank, Patiala.

—

OLD LIFE MEMBERS

99. Sh. Sadhu Ram Saraf Main Bazar, Kurukshetra
100. Pt. Omkar Nath Tiwari, Kacha Gher, Kurukshetra
101. Sh. Gauri Shanker Ganesh Dry Cleaners, Cinema Road, Cheeka Mandi.

LIST OF MEMBERS

1. Sh. Sham Lal Garg, Garg Enterprises, Katra Magni Ram, Kaithal
2. Sh. Jai Pal, Sath Ghara Street, Patiala
3. Sh. Suraj Bhan c/o Gopal Oil Mill Near Bus Stand, Nabha
4. Sh. Amar Nath c/o Amar Nath Chaman Lal C/A, Patran
5. Sh. Baldev Raj Mittal Vice President Market Committee, Bhawanigarh
6. Sh. Mohinder Pal Anand Soap Factory, Amargarh (Sangrur)
7. Dr. Rajinder Kumar Sharma, Press Reporter, Pehowa
8. Sh. Shiv Kumar Gupta 10-D, Model Town, Patiala
9. Sh. Kewal Krishan Gupta, H.No. 2305/1, Sath Ghara Street, Patiala
10. Seth Sarwan Kumar Aggarwal c/o Aggarwal Rice Mill, Puran Mal Nathu Mal, C/A Cheeka Mandi
11. Sh. Ruda Mal Gold Smith Near Gandhi Ground, Samana
12. Sh. Dev Raj c/o M/s Dev Raj & Sons C/A, Samana
13 M/s Aggarwal Trading Company, C/A Ghagga
14 M/s Aggarwal Sharma Trading Company, C/A Ghagga
15. M/s Jai Jawhar Trading Company C/A Ghagga
16 M/s Roop Chand Naresh Kumar C/A Ghagga
17. M/s Girdhari Lal Dev Raj, Comm. Agent, Ghagga
18 M/s Mukandi Lal & Company C/A Ghagga
19. Sh. Ashok Kumar s/o Sh. Brij Lal, Amargarh
20. Sh. Raj Kumar s/o Sh. Jagan Nath Amargarh
21. Sh. Jagan Nath s/o Sh. Tilak Ram Amargarh
22. M/s Rameshwar Dass Lil Kumar C/A Ghagga
23. M/s Megh Raj Dev Raj C/A Ghagga
24. M/s Kissan Trading Co C/A Ghagga
25. M/s Janta Trading Company C/A Ghagga
26. M/s Budh Ram Sat Pal C/A Ghagga
27. M/s Singla Trading Company C/A Ghagga
28. Sh. Puran Chand M/s Puran Chand Prem Chand, Lal Bazar, Malerkotla
29. M/s Vijay Kumar Kali Ram, Amargarh
30. Sh. Nasib Chand s/o L. Des Raj, Amargarh
31. Sh. Rameshwar Dass s/o Sh. Nika Ram, Amargarh
32. M/s Piara Lal Hem Raj, Amargarh
33. Dr. Amarjeet, Jeet Medical Hall, Amargarh
34. Sh. Des Raj s/o Sh. Charanji Lal, Amargarh

35. Sh. Lachhman Dass Bajaj, Amargarh
36. Sh. Sham Lal s/o Sh. Atma Ram Bajaj, Amargarh
37. Sh. Chajju Ram s/o Sh. Rulia Ram, Amargarh
38. M/s Jagan Nath Sham Lal, Amargarh
39. Sh. Balbir Chand s/o Sh. Budh Ram Modi, Amargarh
40. Smt. Shanti Devi w/o Sh. Sarup Chand, Amargarh
41. Sh. Ram Nath s/o Sh. Atma Ram Bajaj, Amargarh
42. Sh. Krishan Kumar s/o Sh. Inderjeet, Amargarh
43. M/s Goyal Trading Co. C/A, Ghagga
44. M/s Babu Ram Aggarwal C/A, Ghagga
45. M/s Mohan Lal Pawan Kumar C/A Ghagga
46. M/s Lal Chand Dharam Pal C/A Ghagga
47. Sh. Darshan Kumar Jain C/A Ghagga
48. M/s Janak Raj Suresh Kumar C/A Ghagga
49. M/s Raghbir Chand Prem Kumar C/A Ghagga
50. Bhagat Niranjan Lal C/A Sunam
51. M/s Pershotam Dass Suresh Kumar C/A Sunam
52. M/s Hari Ram Kewal Krishan C/A Sunam
53. M/s Uma Rice Mill, Sunam
54. Sh. Dwarka Dass Nagra Wale, C/A Sunam
55. Sh. Telu Ram c/o Suresh Kumar Ashok Kumar C/A Sunam
56. M/s Ved Parkash Sat Pal C/A Sunam
57. M/s Jagan Nath Suresh Kumar C/A Sunam
58. M/s Brij Lal Kishan Chand C/A Sunam
59. Sh. Ved Parkash Mirchia, M/s P.K. Gupta and Brothers, Vishv-Karma Street, Gill Road, Ludhiana
60. Sh. Madan Lal c/o Sh. Devi Datta Jewellers, Adalat Bazar, Patiala
61. Seth Ved Parkash c/o M/s Asa Nand Ved Parkash, Gur Mandi, Patiala
62. M/s Puri Karyana Store, Bhadson

63. M/s Megh Raj Ramesh Kumar, Bhadson
64. Sh. Faqir Chand c/o Bajrang Rolling Steel Mill, Mandi Gobindgarh
65. M/s Hans Raj Shambu Ram, Bhadson
66. M/s Megh Raj Suresh Kumar C/A Singla Karyana Store, Bhadson
67. Sh. Hukam Chand Jain, Mahabir Nagar, The Mall, Malerkotla
68. Sh Krishan Parkash Sharma s/o Late Pt. Braham Surti Parkash, Amargarh
69. Sh. Rakesh Kumar s/o Pt. Jagan Nath Sharma, Amargarh
70. Sh. Ram Murti & Sons, Amargarh
71. Sh Sohan Lal M/s Kartarpur Malwa Filling Station, Kartarpur (Jalandhar)
72. M/s Gujjar Mal Harbans Lal C/A, Khanna
73. M/s P.K. Gupta, Ludhiana
74. Sh. Vijay Kumar Gupta, 3180, Model Town, Delhi

BUILDING

(1) लाला हरद्वारी मल्ल लंग निवासो एक बरामदा लगभग 2000/- में बनवाया ।

(2) सावित्री देवो धर्मपत्नी श्री निरंजन लाल महाजन सठघरा, पटियाला । एक बड़ा बरामदा लगभग 8000/- रुपये में बनवाया ।

(3) भूतपूर्व छछरौली निवासो राधा कृष्ण, खजान्ची सदर पटियाला खजाना. लाल बाग पटियाला ने तकरीबन 5000/- पांच हज़ार की लागत से गीता भवन में गेट लगवाया ।

Donors For Printing of Sh. Kurukshetra Darshan

1.	M/s Surindra Iron & Steel Rolling Mills, Mandi Gobindgarh	1100/-
2.	M/s Steel Age Industries, Mandi Gobindgarh	1100/-
3.	M/s Mahavir Iron Store, Mandi Gobindgarh	1100/-
4.	M/s Kaveri Enterprises 502/3, Over Lock Road, Miller Ganj, Ludhiana	1100/-
5.	M/s Bansal Iron & Steel Rolling Mills, Gobindgarh	501/-
6.	Sh. Rameshwar Dass s/o Sh. Yog Dhan, Mandi Gobindgarh	501/-
7.	Sh. Guru Hargobind Steel Roling Mill, Mandi Gobindgarh	251/-
8.	Ram Tirath Iron & Steel Re-Rolling Mill, Mandi Gobindgarh	251/-
9.	M/s Indian Mechanical, Mandi Gobindgarh	251/-
10.	M/s Ram & Company, Mandi Gobindgarh	151/-
11.	Lala Jiwan Lal Bansal c/o M/s Paras Ram Madan Lal, Commission Agents, Main Bazar, Samana Mandi	
12,	Sh. Mohan Lal Mittal s/o Late Sh. Bhagwan Dass Jain c/o M/s Mohan Lal Sudarshan Kumar Mittal Bartan Wale, Samana Mandi	
13.	Sh. Brij Lal Mittal s/o Late Lala Bhagwan Dass Jain 1108, Milap Nagar, Manan Chowk, Hissar Road, Ambala City	
14.	Sh. Ram Dhari Singla c/o M/s Singla Karyana Merchants, Main Bazar, Samana Mandi	

11 to 14 (JOINTLY) Rs. 1000/- ONE THOUSAND ONLY

——

Smt. Kamla wati w/o Seth
Charan Dass (Amargarh Wale)
Chowk Arna Barna, Patiala
Rs. 501/-

Sh. Amar Singh Ji
Singla
Advocate
Business Megnet
Patiala Rs. 501 only

(For Printing of Kurukshetra Darshan)

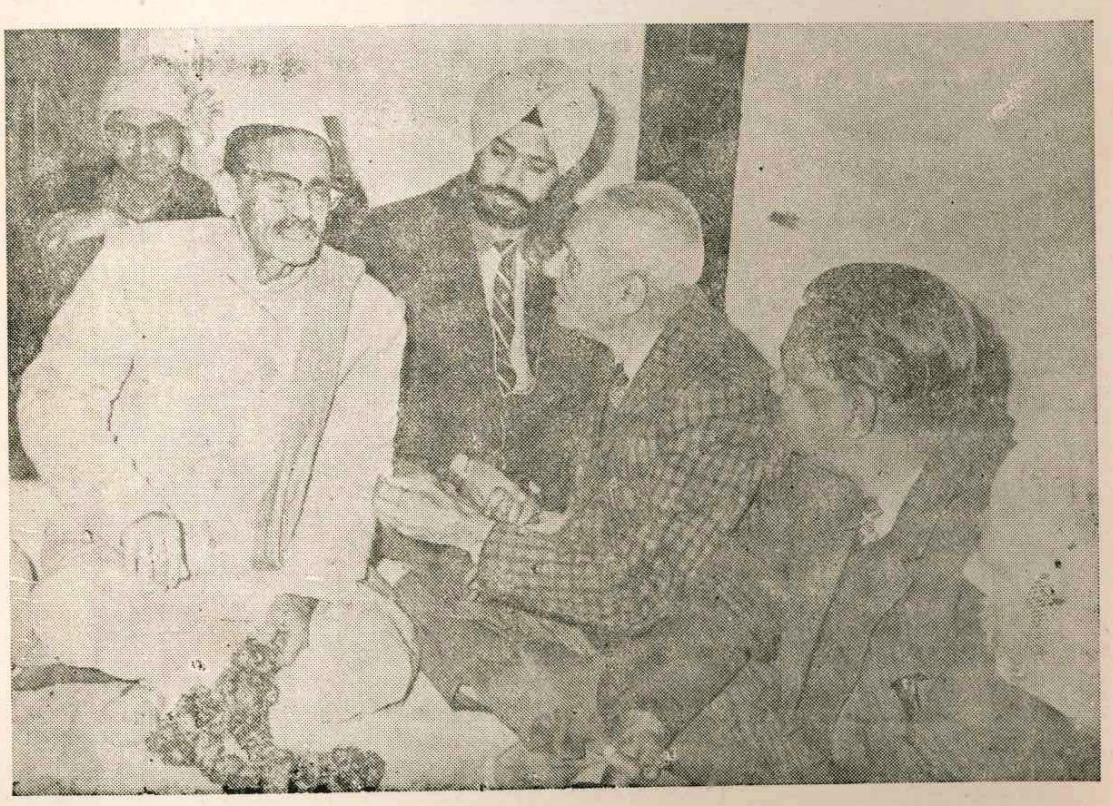

श्री गुलज़ारी लाल जी नन्दा चेयरमैन कुरुक्षेत्र डवैलपमैण्ट बोर्ड गीता भवन में सोसाइटी के कायकर्ताओं, सर्वश्री गिरधारी लाल जी चोपड़ा, कवर विरेन्द्र सिंह, अमर सिंह सिंगला ऐडवोकेट और श्री जोवन लाल जी जैन सैक्टरी ने ब्रह्म सरोवर की धार्मिकता कायम रखने एवं रनिंग पानी की मांग पर विचार कर रहे हैं। नन्दा जी ने यह सब कुछ करवाने का विश्वास दिलाया—जो अब हरियाणा सरकार ने कर दिया।

Sh. JANESHWAR DASS JAIN
A.M. Punjab National Bank,
Railway Road, Malerkotla
Phone : 2265

Rs. 1001/- for Printing of
Kurukshetra Darshan.

गीता भवन मन्दिर में सेठ पूर्ण चन्द अरोड़ा दिल्ली वालों ने 25000/- रुपये की लागत से श्री हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना 24 जून 1988 को करवाई।

गीता भवन में श्री हनुमान जी के मन्दिर का निर्माण सेठ वेद प्रकाश जी, मालिक फर्म मै० आसा राम वेद प्रकाश गुड़ मण्डी, पटियाला वालों ने 10000/- रुपये की धनराशि देकर करवाया।

सेठ जय पाल जी (मै: प्रेम चन्द जय पाल, आढ़ती) चीका मण्डी ने समिति को ११०००/- रुपये सितम्बर १९८८ में सूर्य ग्रहण मेले (लंगर) के लिए दान दिये।

उपरोक्त दानवीर सज्जन सोसायटी की प्रेरणा पर दान में सहयोग देते रहते हैं। समिति इन की आभारी है।

चेयरमैन:— **श्री अमरजीत चोपड़ा** गीता भवन ट्रस्ट, कुरुक्षेत्र

Printed by :— M/s Kishore & Kishore Printers, Purani Kotwali, Patiala Phone : 72431

Thumbs.db